॥ ओ३म् ॥

दयानन्दसन्देश

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का मासिक पत्र

Date of Printing = 05-12-23
प्रकाशन दिनांक = 05-12-23

दिसम्बर २०२३

वर्ष ५३ : अङ्क २
दयानन्दाब्द : १९९
विक्रम-संवत् : माघ-पौष २०८०
सृष्टि-संवत् : १,९६,०८,५३,१२४

संस्थापक : स्व० ला० दीपचन्द आर्य
प्रकाशक व सम्पादक : धर्मपाल आर्य
व्यवस्थापक : विवेक गुप्ता

कार्यालय :

दयानन्दसन्देश (मासिक)
४२७, मन्दिर वाली गली, नया बांस,
खारी बावली, दिल्ली-६
दूरभाष : २३९८५५४५, ४३७८११९१
चलभाष : ९६५०५२२७७८
E-mail : aspt.india@gmail.com

कुल पृष्ट २८
एक प्रति १५.०० रु०

वार्षिक शुल्क १५०) रुपये
पंचवर्षीय शुल्क ५००) रुपये
आजीवन शुल्क ११००) रुपये
विदेश में ५०००) रुपये

इस अंक में

- वेदोपदेश २
- क्या इजराइल गाजा जंग में मुस्लिम..... ३
- परमात्मा और जीव का सख्यभाव ६
- क्रोध अभिशाप है इससे बचिये ! ९
- कैसा है हलाल का मायाजाल १०
- आर्यो ! जरा सोचिये १३
- कौन कहता है, कि हम हो गए आजाद... १६
- पिता जी की शिक्षाप्रद मृत्यु १७
- वर्तमान समाज में युवाओं का भूमिका २०
- आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ? २१
- हमारा अभिवादन नमस्ते ही है २३
- चन्द्रयान सफलता २४
- वैदिक राजधर्म २५

विशेष : दयानन्द सन्देश में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनसे सम्पादक की पूर्णतया सहमति आवश्यक नहीं है। अत: किसी भी चर्चा/परिचर्चा एवं वाद-विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

सत्यार्थप्रकाश

प्रचार संस्करण – ४००० रुपये सैकड़ा
स्पेशल (सजिल्द) – ६००० रुपये सैकड़ा में प्राप्त करें।

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। —महर्षि दयानन्द

वेदोपदेश—ज्योतिर्वृणीत तमसो विजानन्नारे स्याम दुरितादभीके ।
इमा गिरः सोमपाः सोमवृद्ध जुषस्वेन्द्र पुरुतमस्य कारोः ॥

—ऋ० ३।३९।७

शब्दार्थ—**विजानन्**=विज्ञानी मनुष्य **तमसः**=अन्धकार से हटकर **ज्योतिः**=प्रकाश को **वृणीत**=वरण करे, पसन्द करे। हम **दुरितात्**=दुर्गति से **अभीके+आरे**=अत्यन्त दूर **स्याम**=होवें । हे **सोमपाः**=सोमरक्षक **सोमवृद्ध**=सोम के कारण **वृद्ध इन्द्र**=इन्द्र! योगात्मन्! **पुरुतमस्य**=सर्वश्रेष्ठ **कारोः**=स्तोता-पदार्थ-ज्ञानकारक की **इमाः**=इन **गिरः**=वचनों को, वेदवचनों को **जुषस्व**=प्रीतिपूर्वक सेवन कर ।

व्याख्या—अन्धकार मृत्यु है, प्रकाश जीवन है, अतः वेद ने आदेश किया—

ज्योतिर्वृणीत तमसो विजानन्=विज्ञानी मनुष्य अन्धकार से (अन्धकार छोड़कर) प्रकाश को चुने।

अन्धकार और प्रकाश का भेद जिसे ज्ञात होगा, वही अन्धकार त्यागकर प्रकाश को पकड़ेगा। इसीलिए '**विजानन्**' शब्द का प्रयोग किया है।

वेद में प्रकाश की कामना अनेक स्थानों पर की गई है। सन्ध्या के उपस्थान मन्त्र में आता है—

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्[1]=हम अन्धकार को छोड़कर श्रेष्ठ प्रकाश को देखें। प्रकृत मन्त्र से अगले मन्त्र में ही कहा गया है-

ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी अनुष्यात्—ऋ० ३।३९।८=दोनों लोकों में यज्ञ के लिए प्रकाश व्याप्त हो।

प्रकाश का प्रयोजन है यज्ञ। एक-दूसरे का हित साधन यज्ञ है, उससे परम कल्याण मिलता है।

प्रकाश के ज्ञान का फल दूसरे चरण में बतलाया है—**आरे स्याम दुरितादभीके**=दुरित से, दुर्गति से हम बहुत दूर हों, अर्थात् ज्ञानप्रकाश का फल यह होना चाहिए कि हमें भले-बुरे का विवेक हो । बुरे कर्म का फल दुरित=दुर्+इत दुर्गति होती है, यह ज्ञान होना चाहिए।

सारा-का-सारा वेद मनुष्य को दुरित से हटने की प्रेरणा है, अतः भगवान् ने आदेश किया—**इमा गिरः.....कारोः**=सर्वोत्कृष्ट ज्ञानदाता के इन वचनों का प्रीतिपूर्वक सेवन कर, अर्थात् वेदानुसार आचरण कर।

इन्द्र=जीव को इस मन्त्र में 'सोमपाः' कहा है। सोमपाः का अर्थ है, सोमपान करनेवाला, तथा सोम की रक्षा करनेवाला, अर्थात् भोग्य पदार्थों की रक्षा भी जीव का कर्तव्य है। जीव सोमवृद्ध है,

१. यजुः० ३५।१४

(शेष पृष्ठ १५ पर)

क्या इजराइल गाजा जंग में मुस्लिम हमास को आइना दिखा रहा है ?

–धर्मपाल आर्य

गाजा जंग में यह शब्द एक बार फिर हमास शब्द मुखर है। इजराइल को रोकने के लिए कई बैठक भी मुस्लिम देशों के बीच हुई। निंदा प्रस्ताव पास हुए अमेरिका के अलावा, इजरायल के लगभग सारे अहम दोस्त देशों ने आवाज उठाई है और वे कुल मिलाकर एक तरह की बात कह रहे हैं। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा में युद्ध विराम की मांग करने वाले मतदान में वोट देने से परहेज किया। लेकिन नेतन्याहू के इजरायल को इस सबसे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन उसके पक्ष में वोट कर रहा है और कौन विरोध में।

ऐसे में सवाल है कि आखिर डेढ़ करोड़ की आबादी वाला यहूदी करीब २ अरब मुस्लिमों से इतना निडर क्यों है? यानि एक तरफ डेढ़ करोड़ लोग है तो दूसरी तरफ २०० करोड़ दुनिया की मौजूदा आबादी का एक एक चौथाई हिस्सा लेकिन नेतन्याहू बेपरवाह है। आखिर इस बेपरवाही का कारण क्या है? क्या नेतन्याहू को इस बात का जरा सा भी डर नहीं है कि अगर ये २०० करोड़ एक साथ मिलकर झपट पड़े तो उसका क्या होगा?

दरअसल इसका जवाब अतीत में मिल सकता है और हमास जैसे खोखले शब्द का भी। आज सोशल मीडिया पर इजराइल को मुस्लिमों का हत्यारा बताया जा रहा है लेकिन इस्लाम की इस मूल प्रवृति को नेतन्याहू जानता है कि मोहम्मद साहब के बाद बारह इमाम और खलीफाओं का कत्ल किया गया क्या कोई बता सकता है कि उसमें किसका हाथ था? इजराइल का या किसी ईसाई देश का?

आज इजराइल को गाजा के मुसलमानों का हत्यारा बताया जा रहा है। लेकिन सवाल है कि इमाम हसन को मक्का किसके कारण छोड़ना पड़ा और उन्हें कर्बला में घेरकर उनके दोस्तों और परिवार वालों के साथ हत्या करने वाले कौन लोग थे? क्या इसमें इजरायल का हाथ था जैसा कि आज मध्य पूर्व की हर एक हिंसात्मक घटना के बाद इजरायल का नाम लिया जाता है?

बताया जाता है कि हजरत मुहम्मद की बेटी फातेमा को हजरत के दुनिया से जाने के ७५ या ९५ दिन के बाद ही कत्ल किया गया। उस समय फातिमा की आयु केवल १८ साल की थी। क्या कोई बता सकता है कि उसमें किसका हाथ था, अमेरिका या इजराइल का? इसके कुछ वर्षों के बाद फातिमा के पति हजरत अली जो मुसलमानों के खलीफा भी रहे उनकी हत्या कर दी गयी, फिर हजरत अली और फातिमा के बड़े बेटे हसन को काट दिया गया, क्या कोई बता सकता है कि इसमें किसका हाथ था? इसके बाद इमाम हुसैन को कर्बला में मार दिया गया, फिर उनके बेटों को और फिर उन के बेटों के बेटों को मारा गया। हजरत मुहम्मद के इस घराने पर जुल्म करने वाले हमेशा उस समय के मुसलमान ही थे।

इसलिए अमेरिकी लेखक डेनियल पाइप्स ने एक बार कहा था कि एक आस्थावान मुसलमान कभी इस्लाम का विश्लेषक नहीं हो सकता। इसी तरह एक अच्छा विश्लेषक कभी आस्थावान मुसलमान नहीं हो सकता। क्योंकि इस्लाम के

अन्दर जो भी है अगर उन्हें जाँच परख कर देखें तो सब कुछ काल्पनिक है।

आज भले ही दुनिया की आबादी में मुसलमानों का हिस्सा करीब २५ फीसदी है और दुनिया की जीडीपी में उनका हिस्सा करीब २३ फीसदी है। जबकि यहूदियों का हिस्सा सिर्फ इतना है कि वे दुनियाभर में कई वित्तीय संस्थानों का नेतृत्व कर रहे हैं, इससे अधिक कुछ नहीं। किन्तु वो एकजुट हैं। इसका अनुमान कई चीजों से लगा सकते है। एक तो सात अक्तूबर की घटना के बाद इजराइल के सभी दल सत्तापक्ष और विपक्ष एक हो गये। दूसरा दुनिया की दौलत के केंद्र हैं या जहाँ बड़ी-बड़ी लेन-देन होती हैं, अच्छी-खासी संख्या में यहूदियों ने सड़कों पर आकर इजरायली हमलों का विरोध किया है। जबकि हमास वाले सिर्फ दिखावे के पोस्टर लिए दिखे।

जिन देशों में मुसलमान बहुमत में हैं उनमें भी जिन्होंने निंदा की है, उनकी संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। उनमें एक मिस्र है जिसके नेता सीसी के एक बयान को पश्चिमी दुनिया में काफी उद्धृत किया गया और उसका खंडन नहीं किया गया, इसके अलावा यूएई और एक-दो और देश भी हैं।

जरा गौर कीजिए! दुनिया की एक चौथाई आबादी, दुनिया की अर्थव्यवस्था में लगभग इतनी ही भागीदारी, दुनिया में तेल के भंडार का बड़ा हिस्सा, परमाणु शक्ति (पाकिस्तान) समेत काफी मजबूत सैन्य शक्ति और यहूदियों की आबादी से १५० गुना ज्यादा की आबादी वाली ताकत इजरायल को रोकने में विफल रही है। इजरायल उसे मनमर्जी रगड़ने में सफल दिख रहा है। कहाँ गया हमास ?

दरअसल हमास जैसी कोई चीज है ही नहीं, यह सिर्फ अलग-अलग देशों में कुछ भीड़ है। उन देशों में जहाँ इनकी संख्या अभी १० से २० फीसदी है। वहाँ उन देशों में यह लोग सिर्फ भावना आहत होने के नाम पर दंगा करने गैर मुस्लिम लोगों की दुकानें लूटने, रेप करने या फिर आग लगाने के अलावा कहीं दिखाई नहीं देती।

दूसरा पिछले तीन दशकों में शेष दुनिया आधुनिकता के करीब गयी, गैर मुस्लिम दुनिया ने अपने अपने समाज से कुप्रथाओं से दूरी बनाई एक नये आधुनिक समाज का निर्माण किया। एक दुसरे की भाषा को स्वीकारा, समाज और उत्सव को स्वीकार किया। लेकिन इस्लाम से जुड़े अधिकांश लोगों ने कुप्रथाओं को शेष दुनिया में थोपने के लिए अलग अलग देशों में आतंक का खूनी खेल मचाया। दूसरों के धार्मिक स्थल उडाये, हिंसा की और अपनी जगह एक हिंसक समाज के रूप में स्थापित की। तीसरा एक सियासी इस्लाम का गठन किया जो अन्य लोगों की आस्था, और उनकी प्रथाओं तथा रीति-रिवाजों से दूर और उन्माद की एक कल्पना के साथ, जिसके साथ मुसलमानों की पहचान पर आधारित कई अखिल-राष्ट्रीय संगठन बनाए हैं। उनमें सबसे प्रमुख है 'ओ॰आई॰सी॰' (ऑर्गनाइजेशन ऑफ इस्लामिक को-ऑपरेशन), जिसके सदस्य देशों की संख्या ५७ है, और पांच देश 'ऑब्जर्वर' हैं. वैश्विक जी॰डी॰पी॰ में इन देशों का कुल हिस्सा करीब २३ फीसदी का है। लेकिन साझा इस्लामी मकसद के लिए, एक समूह के तौर पर इस सबकी उपलब्धियां जीरो रही।

जीरो होने का कारण क्या रहा वही छठी शताब्दी वाला कारण यानि खलीफा कौन बने? इस खलीफाई दौड़ में सबसे पहले सऊदी ईरान तकरार इराक ईरान वार, दूसरा तुर्की वाला एर्दोगन चाहता है कि वो खलीफा बने, मलेशिया वाला महातिर है। कतर का किंग है यू॰ए॰ई॰ का किंग है। अफ्रीका और एशिया में गरीब मुस्लिम हैं। कर्ज तले दबा पाकिस्तान है। सोचिये! इनके आपसी

इतने झगड़े है तो फिर हमास कहाँ है?

कारण जो गल्फ को-ऑपरेशन काउंसिल' यानि जीसीसी है जिसमें सदस्य देश बहरीन, कुवैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात है जो प्रभावशाली देश है यूरोप अमेरिकी से सबसे ज्यादा दोस्ती उसकी ही है। इसके दो अहम सदस्य अब्राहम समझौते में शामिल हुए और तीसरा भी शामिल होने जा रहा था कि हमास ने हमला कर दिया।

कतर हालांकि जी॰सी॰सी॰ का सदस्य है, लेकिन भौगोलिक और राजनीतिक दृष्टि से परिधि पर ही स्थित है, और ईरान, अमेरिका तथा पश्चिम जगत के धुर विरोधी तथा राष्ट्रीयता विहीन मुस्लिम उम्मा तथा हमास जैसे गिरोहों के साथ अपने गहरे रिश्ते को निभाने में लगा है। सीधे-सीधे कहा जाए तो कतर बस कतर बनने में ही लगा है।

अगर हम तथाकथित इस्लामी दुनिया के संघर्षों के इतिहास पर नजर डालें तो पाएंगे कि पिछले ५० वर्षों से वह अपने भीतर ही संघर्षों में उलझा रहा है। एक बार थोड़ी एकता १९६७ में हुई थी लेकिन इजराइल के हाथों भंयकर पराजय के साथ सब अपनी-अपनी औकात समझ गये थे। अब अमेरिका समर्थित सऊदी सेना और यमन के हौदियों के बीच हुए युद्ध को देखिए। सुडान में जारी गृहयुद्ध में पिछले एक दशक में करीब तीन लाख लोग मारे जा चुके हैं। इनके अलावा, इससे पहले उसके दरफुर सूबे में करीब दो लाख लोगों के मारे जाने का आंकड़ा दर्ज किया जा चुका है। सीरिया में गृहयुद्ध में करीब चार लाख मुसलमान मारे जा चुके हैं। पिछले एक दशक में मुस्लिम दुनिया में १० लाख से ज्यादा मुसलमान मुसलमानों के हाथों ही मारे गए हैं।

दुनिया को आठ साल चले ईरान-इराक युद्ध, अफगानिस्तान-पाकिस्तान युद्ध, मुजाहिदीन से तालिबान और तालिबान से मुजाहिदीन तक का इतिहास मालूम है। मुस्लिम 'दुनिया' के सारे संकट के लिए पश्चिम को दोष देने का फैशन भले रहा हो, हकीकत यही है कि सद्दाम हुसैन के इराक ने ही पहले कुवैत पर धावा किया था, इस्लामी ताकतों ने ही अमेरिका से गुहार लगाई थी कि वह आकर उसे मुक्त कराए।

यानि २०० करोड़ की आबादी वाला यह ताकतवर समुदाय अपनी ताकत से कमजोर हमला करता है, तो इसकी एक मुख्य वजह यह है कि वह खुद कई विरोधाभासों और आपसी संघर्षों से जूझता रहता है। उनमें सबसे आत्मघाती यह है कि वह इस हकीकत को कबूल करने में विफल रहा है। आस्था पर आधारित एकता हमास के इस धोखे का एक बार फिर पर्दाफाश इस तथ्य से हो गया है कि मुस्लिम दुनिया गाजा युद्ध में इजरायल की कार्रवाइयों पर लगाम लगाने में विफल रही है। नेतन्याहू हो या कोई भी इजरायली नेता हो, वह हमेशा इस सुरक्षित पूर्वानुमान के आधार पर कार्रवाई करता है कि उम्मा जैसा शब्द सिर्फ खोखला है। ❑❑

- **गौ आदि पशुओं की रक्षा से संसार का बड़ा उपकार है ।**
- **गौ आदि पशुओं की रक्षा सभी प्राणियों के सुख के लिये आवश्यक है।**
- **गौ आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है।**

(महर्षि दयानन्द द्वारा रचित-गो करुणानिधि पुस्तक से)

ज्ञान और कर्म-बिना कर्म ज्ञान व्यर्थ है, बिना ज्ञान कर्म अंधेरे में भटकने के समान है।

परमात्मा और जीव का सख्यभाव

–उत्तरा नेरूर्कर, बंगलौर (मो०–९८४५०५८३१०)

वेदों ने परमात्मा और जीव को सखा या मित्र घोषित किया है । परन्तु इन दोनों में तो स्वामी–सेवक सम्बन्ध होना चाहिए ? वेदों ने भी अनेकत्र परमात्मा को नाथ, स्वामी, आदि, पुकारा है । तब क्या यहाँ मित्रता का सम्बन्ध कहना उपयुक्त है? जानते हैं इस लेख में ...

प्राय: सभी इस प्रसिद्ध वेदमन्त्र से परिचित होंगे जहाँ यह सखित्व स्पष्ट रूप से कहा गया है–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समाने वृक्षे परि षस्वजाते ।
तयोरन्य: पिप्पलस्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति ॥

–ऋग्वेद: १।१६४।२०, अथर्ववेद: ९।९।२० ॥

अर्थात् दो सुन्दर पंखों वाले पक्षी, जो कि जुड़े हुए हैं और एक–दूसरे के सखा है, एक वृक्ष पर लिपटे बैठे हैं । उनमें से एक तो उस वृक्ष के स्वादिष्ट फलों को खाता है, जब कि दूसरा बिना कुछ खाए उसको देखता रहता है । इस रूपक अलंकार से जीवात्मा व परमात्मा का सम्बन्ध बहुत ही हृदयग्राही प्रकार से दर्शाया गया है । जहाँ दोनों में इतनी समानताएं हैं, वहाँ वे एक–दूसरे से बहुत भिन्न भी हैं, जिस प्रकार दो मित्र होते हैं ! सखा का अर्थ ही होता है – समानं ख्यानं यस्य – जिसका वर्णन दूसरे व्यक्ति के समान हो । मित्र वही हो सकते हैं जिनमें कुछ समानताएं हों–और, सम्बन्ध के रुचिपूर्ण होने के लिए, उनमें भेद भी आवश्यक है । यही तो जीवात्मा और परमात्मा के बीच में पाया जाता है !

मन्त्र 'सुपर्ण' से दोनों की चेतनता को इंगित करता है, जो कि वृक्षरूपी प्रकृति में नहीं पाई जाती । इस चेतनता से इच्छा आदि का भी प्रत्यारोपण होता है । यह भौतिक इच्छा न होकर, सात्त्विक इच्छा है, जैसे ईश्वर की संसार की रचना करने की इच्छा (लौकिक भाषा में), अथवा जीव की परमात्मा को प्रत्यक्ष करने की इच्छा । ऐसे ही कुछ गुण इन दोनों को समान ख्यान वाले सखा बना देते हैं। दोनों एक–दूसरे के अगल–बगल बैठे होने पर भी, उनमें से एक ही दूसरे को देख रहा होता है– दूसरे को इसके लिए बहुत प्रयत्न करके स्वादिष्ट फलों का आस्वादन छोड़ना पड़ता है !

यह सख्यभाव कैसा है, इसको अथर्ववेद के एक सूक्त में विशेष निरूपित किया गया है, जहाँ अथर्वा अर्थात् निरुद्धचित्त योगी और वरुण अर्थात् वरणीय प्रभु का वार्तालाप है (इसीलिए इस सूक्त का ऋषि अथर्वा है और देवता वरुण है) । यहाँ अथर्वा पहले विनती करता है –

आ ते स्तोत्राण्युद्यतानि यन्त्वन्तर्विश्वासु मानुषीषु दिक्षु ।
देहि नु मे यन्मे अदत्तो असि युज्यो मे सप्तपद: सखा ॥

अथर्ववेद:५।११।९॥

अर्थात् हे वरुण ! सारी मानवीय दिशाओं में तेरी स्तुतियां उदय होकर फैल गई हैं (अर्थात् मेरे मन में सर्वत्र अब तेरी ही स्तुतियां हैं – मैं अब कुछ और सोचता ही नहीं हूँ) । (इसलिए)

अब तू मुझे वह दे जो तूने अभी तक मुझे दिया नहीं है (अर्थात् तेरा साक्षात्कार), (क्योंकि) तू मेरा सात पदों वाला जुड़ा हुआ सखा है ।

योगी यहाँ परमात्मा को कहता है कि मैंने तो सब प्रकार से तेरा वरण कर लिया है, परन्तु तूने अभी तक मुझे अपना रूप भी नहीं दिखाया है। कब तू अपने को प्रकट करेगा? जल्दी आ! सात पदों अर्थात् जन्मजन्मान्तर से हम दोनों जुड़े हुए हैं, फिर भी मैंने तुझे कभी प्रत्यक्ष नहीं देखा है। अब तो पर्दे के पीछे से सामने आ जा !

उसी विनती को आगे बढ़ाते हुए अगला मन्त्र कहता है–

समा नौ बन्धुर्वरुण समा जा वेदाहं तद्यन्नावेषा समा जा ।
ददामि तद्यत् ते अदत्तो अस्मि युन्यस्ते सप्तपदः सखास्मि ॥

अथर्ववेदः ५।११।१०॥

यहाँ पहले पाद में अथर्वा का वचन है और शेष तीन पादों में वरुण का उत्तर है । अथर्वा कहता है – हे वरुण ! हम दोनों की बन्धुता समान है और हमारी उत्पत्ति भी समान है (तो फिर तू मेरा गाढ़ा मित्र ही हुआ) । अथर्वा की इस गुहार से द्रवित होकर, वरुण कहता है – मैं जानता हूँ कि यह हमारी उत्पत्ति एक-समान है । (इसलिए) मैं तुझे वह देता हूँ जो अब तक मैंने नहीं दिया। (निश्चय से,) तू मेरा सप्तपद सखा है ।

अवश्य ही, न तो परमात्मा की उत्पत्ति होती है, न ही जीवात्मा की, इसलिए यहाँ जिस उत्पत्ति की चर्चा की गई है, वह भौतिक शरीर में दोनों का जुड़ना है, दोनों का 'बन्धुत्व = बन्धाना' है । जहाँ एक ओर जीवात्मा अपनी अणुता के कारण शरीर के एक कोने में बैठा होता है, वहीं परमात्मा सर्वव्यापी होते हुए भी उसी कोने में, उसकी बुद्धि में, उसको प्राप्त होता है। इस प्रकार से दोनों की यह उत्पत्ति यहाँ समान कही गई है । जीव याद दिलाता है कि यद्यपि आप मेरे साथ 'उत्पन्न' तो हो गए थे, और आपके आदेशानुसार मैंने तप कर-करके चित्त में से सब भौतिक लालसाओं को हटाकर, आपका ही प्रेम भर दिया है, तथापि आपने आज तक मुझे दर्शन नही दिए हैं । कृपया अब तो सामने आइए ! परमात्मा भी जीवात्मा को अपना साथी स्वीकारते हुए, उस पर द्रवित होकर, उसे दर्शन दे देते हैं ।

इस प्रकार, इस अथर्ववेद के ५।११ सूक्त में हम भक्त योगी का प्रभु के साथ वार्तालाप का बहुत मार्मिक वर्णन पाते हैं, और दोनों के सखित्व के सही अर्थ को समझ पाते हैं ।

इस सख्यभाव को मनुष्य कैसे जान पाता है, इस विषय पर वेदमन्त्र कहता है –

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ।
अत्र सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ॥

ऋग्वेदः १०।७१।२॥

अर्थात् जहाँ ज्ञानीजन, छलनी से सत्तू को शोधने के समान, मन से वाणी को शोधते हुए बोलते हैं, वहाँ ये समान ख्यान वाले जन सख्यभाव को जान लेते हैं । इन ऋषियों की वाणी में कल्याणकारिणी लक्ष्मी निहित होती है ।

मुख्य रूप से तो यहाँ सख्यभाव वाणी से बताया गया है, अर्थात् वैदिक शब्दों के अर्थों का

साक्षात्कार करना, परन्तु वस्तुतः वेदवाणी में जो 'लक्ष्मी' निहित है, वह प्रभु के साथ सख्यभाव ही है, जो प्रभु उसके बताए ज्ञान, उसके बताए मार्ग से ही प्राप्त होता है । परमात्मा तो सभी आत्माओं से प्रेम करता है, आत्माएं ही उसको नहीं जान पातीं । उसको जानने के लिए वेदवाणी से भी सख्यभाव करना, उसके तात्पर्य का यथार्थरूप में समझना एकमात्र मार्ग है ।

भावविभोर होकर भक्त रो पड़ता है–

देवो देवानामसि मित्रे अद्भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे ।
शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥

ऋग्वेदः १।९४।१३॥

अर्थात् हे पवित्र करने वाले अग्ने ! तुम देवों के देव हो । (मेरे और सभी जीवात्माओं के) अद्भुत मित्र हो । तुम वसुओं के वसु हो । तुम श्रेष्ठ हो । तुम्हारे बताए विस्तृत अहिंसापूर्ण श्रेष्ठ मार्ग पर (चलते हुए) हम सुखी हों । तुम्हारे सख्य में हम कभी हिंसित न हों ।

इस मन्त्र में अनेक बातें भक्त के लिए कह दी गई हैं । इन्द्रियों आदि देवों का वह देव अग्नि पवित्रकारक है । इसलिए जब हम उस देव में मन लगाते हुए, इन्द्रियों के भोग्य विषयों से ऊपर उठते हैं, तब हम पवित्र हो जाते हैं । जबकि वह विरक्ति का मार्ग कठिन है, तथापि वह वसु शरीर में वास कराने वाले तत्त्वों में से श्रेष्ठतम है । इसलिए उसका आश्रय लेकर, इस सुविस्तृत मार्ग पर जाने का साहस कर सकते हैं । मार्ग भी सुविस्तृत है – ऐसा नहीं है कि हम शीघ्र अपने गन्तव्य पर पहुँच जाएंगे । जैसा कठोपनिषद् का प्रसिद्ध वाक्य है – दुर्गमपथस्तत् कवयो वदन्ति – ज्ञानी जन हमें बताते हैं कि वह पथ दुर्गम है । तथापि हिंसा न करते हुए जब हम उसपर जाएं, तो प्रभु से प्रार्थना है कि हम सुखी रहें – कष्ट तो बहुत आएंगे, परन्तु उन्हें, अपने में समत्व बनाए हुए, झेल जाएं । प्रत्युत तुम्हारी मित्रता में जैसे-जैसे अपने को तुम्हारे निकट पाएं, तो हमारे सारे ही कष्ट छूट जाएं । आपके सान्निध्य से, आपके मैत्रीभाव के ज्ञान से मेरा आत्मा भर जाए और मेरे शारीरिक कष्ट या तो मैं भूल जाऊं, या वे मुझे भूल जाएं !

क्योंकि योग का मार्ग अकेले ही पूरा करना पड़ता है, इसलिए मनुष्य उस पर पग धरने में भी डरता है । ऋषि दयानन्द के जीवन-वृतान्त में ही हम देखते हैं कि कैसे उन्हें चोर-लुटेरों, व्यभिचारियों, हिंसक पशुओं, आदि, का सामना करना पड़ा । अन्त में, हिंसक मनुष्यों ने ही उनके प्राण भी हर लिए ! यह सब जानते हुए, कौन इस मार्ग से न कतराएगा ? तब वेद, उपनिषद्, आदि, ही हमारा हाथ पकड़ते हैं और हमें साहस के साथ आगे बढ़ने का मार्ग बताते हैं, जैसा कि प्रथम बताए मन्त्र से अगले मन्त्र में वेद कहता है–

यत्र सुपर्णा अमृतस्य भागम् अनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति ।
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमत्र विवेश ॥

ऋग्वेदः १।१६४।२१॥

अर्थात् जिस ज्ञानमय परमेश्वर में जीवरूपी सुन्दर पक्षों वाले ज्ञानवान् पक्षी, मोक्ष के भाग को (उसकी प्राप्ति को) निरन्तर बताते हैं, उस विश्व के स्वामी और रक्षक को वह (उनमें से कोई) धयानवान् योगी मुझ योग से 'पके हुए' पात्र में अपना ज्ञान उड़ेल दे – मोक्ष के मार्ग की प्राप्ति

के उपायों को कहे ।

पतञ्जलि मुनि कहते हैं –

स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात् ॥ ॥ योगदर्शनम् १।२६॥

वह ईश्वर तो पुरातन गुरुओं का भी गुरु है, काल से नष्ट न होने के कारण । जैसे वह जन्मजन्मान्तर से हमारा मित्र है, वैसे ही गुरु भी है । वही हमको इस दुःखमय भवसागर के ही नहीं, अपितु कण्टक भरे योगमार्ग के भी पार ले जाएगा । उस एक की ही शरण अर्थपूर्ण है ! उसके अदृष्ट होते हुए भी, उसे गुरु कैसे बनाएं, इस पर वेद कहता है–

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे ।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥

–ऋग्वेदः १।२२।१९, यजुर्वेदः ६।४ व १३।३३, सामवेदः १६७१, अथर्ववेदः ७।२६।६॥

अर्थात् हे जीवो ! तुम सर्वव्यापक परमेश्वर के कर्मों को देखो = जानो, जिससे कि अपने व्रतों = कर्तव्यों का सही ग्रहण कर सको, क्योंकि तुम उस ऐश्वर्यवान् इन्द्र के योग्य अथवा जुड़े हुए सखा हो । यहाँ निहितार्थ है कि वेदवाणी, जो कि परमात्मा की एक कृति है, को जानकर जीवात्मा को अपने कर्मों को निर्धारित करना चाहिए, जिससे अन्ततः वह उस जुड़े हुए सखा को भी देख ले ! इस निहितार्थ को अगला मन्त्र प्रदर्शित करता है –

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।
दिवीव चक्षुराततम् ॥

–ऋग्वेदः १।२२।२०, यजुर्वेदः ६।५, सामवेदः १६७२, अथर्ववेदः ७।२६।७॥

अर्थात् उस पूर्वमन्त्रोक्त विष्णु के परम पद को निरुद्ध योगी सदा देखते रहते हैं – सदैव परमात्मा में स्थित होकर उसके आदेशों का पालन करते हैं, उसकी उपासना करते हैं – जिस प्रकार दिन के प्रकाश में चक्षु देखता है, देखने में समर्थ होता है । वह मोक्षपद उन्हीं को प्राप्त हो सकता है जो प्रभु को गुरु मानकर, उसके वचन वेद को हृदयंगम करके, उसके अनुसार व्रतों का ग्रहण करते-करते अन्तिम पड़ाव, परम पद मोक्ष, तक पहुँच जाते हैं ।

परमात्मा हमारा परम मित्र है । हम भी उसके योग्य और उससे जुड़े हुए सखा हैं, परन्तु संसार के बन्धान में उसे भूल जाते हैं । जो हम उसको ढूढ़ने में अपना सर्वस्व लगा दें, तो जो हमें प्राप्त होगा, वह अतुल्य और अपरिमित होगा । हमें अपने में सख्यभाव जगाने की देर है ! ❑❑

क्रोध अभिशाप है इससे बचिये !

"क्रोधाद् भवति संमोहः संमोहात् स्मृति विभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशः बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ॥"

क्रोध से संमोह (अविवेक) उत्पन्न होता है, संमोह से स्मृति का विभ्रम होता है। स्मृति का विभ्रम होने से बुद्धि नष्ट होती है, बुद्धि नाश से मनुष्य नष्ट हो जाता है। अर्थात् उचित अनुचित के विवेक से शून्य हो जाता है। **–गीता**

कैसा है हलाल का मायाजाल

–राजीव चौधरी (मो०–९५४००२९०४४)

हलाल उत्पादों को लेकर मामला एक बार फिर से सुर्खियों में है। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ सरकार ने बिना किसी अधिकार के खान-पान और ब्यूटी प्रोडक्ट्सों पर अवैध तरीके से हलाल सर्टिफिकेट देने के कारोबार पर बैन लगा दिया है। सरकार ने हलाल सर्टिफाइड प्रॉडक्टस का निर्माण, बिक्री और भंडारण अवैध करार दिया है। ऐसा पाए जाने पर सम्बन्धित फर्म (व्यक्ति) के खिलाफ औषधि और प्रसाधन सामग्री कानून के तहत सख्त कार्रवाई की जाएगी। यानि जो संस्थाएं हलाल सर्टिफिकेशन के नाम पर कारोबार कर रही हैं, वो कैसे बता रही हैं कि मधुमक्खी का शहद हलाल है या हराम?

दरअसल अरबी भाषा के दो शब्द हैं–एक हलाल यानि (वैध) दूसरा हराम यानि (अवैध) उर्दू में इसे जायज नाजायज भी कह सकते हैं। देश में कुछ संस्थाएं हैं जो यह चीज तय करती हैं कि मजहब वालों के लिए क्या हलाल है और क्या हराम है। हाँ! सालों पहले हलाल का इस्तेमाल मीट के लिए हुआ करता था, लेकिन पिछले दिनों इसका प्रयोग सौंदर्य प्रसाधन, चीनी, पिपरमिंट तेल, खाद्य तेलों, और बेकरी उत्पादों पर भी होने लगा है।

हालाँकि भारत में हलाल सर्टिफिकेट देने के लिए कोई आधिकारिक या सरकारी संस्था नहीं है। कई निजी कंपनियां और एजेंसियां व्यक्तिगत तौर पर कंपनियों को हलाल सर्टिफिकेट मुहैया कराती हैं। एक कंपनी हलाल इंडिया अपनी वेबसाइट पर दावा करती है कि वह किसी भी प्रोडक्टि को लैब में टेस्टिंग और कई तरह के ऑडिट के बाद ही हलाल सर्टिफिकेट देती है। हलाल इंडिया के सर्टिफिकेट को कतर, यू० ए० ई० और मलेशिया जैसे इस्लाटमिक देशों में मान्यता मिली हुई है। दूसरी हलाल इंडिया, दिल्ली की जमीयत उलमा-ए-हिंद हलाल ट्रस्ट और मुंबई की हलाल काउंसिल ऑफ इंडिया भी हलाल सर्टिफिकेट बांटती हैं।

यानि जिसे यह सर्टिफिकेट देगी मुसलमान उसका माल खरीदेगा। सर्टिफिकेट के बदले जो यह कम्पनी पैसा लेगी वो इस्लाम के फैलाव में इस्तेमाल किया जायेगा। बस यही मामला अब उभरकर सामने आया है। आरोप है कि कुछ संस्थाएं हलाल सर्टिफिकेशन के नाम पर अवैध कारोबार कर रही हैं और हलाल सर्टिफिकेट के नाम पर जुटाए जा रहे धन से आतंकवादी संगठनों और राष्ट्र विरोधी गतिविधियों की फंडिंग की जा रही है।

अब ऐसे में सवाल फिर बन रहा है कि आखिर ये पूरा खेल कैसे खेला जाता है। और हम भी जो प्रोडक्ट यूज करते हैं उसका पैसा भी क्या हलाल कम्पनियों को जाता है? समझिये जिस तरह शाकाहारी लोग खाने के पैकेट्स पर ग्रीन डॉट देखकर मानते हैं कि खाना शाकाहारी है, उसी तरह इस्लाम को मानने वाले लोग हलाल प्रोडक्ट्स इस्तेमाल करना चुनते हैं। उनके लिए 'हलाल' लोगो का मतलब है कि ये प्रोडक्ट बनाने में सारी गाइडलाइंस का ध्यान रखा गया है और हलाल कम्पनियों को इसका पैसा जा रहा है तब वो खरीदता है। यानि ये साइलेंट इस्लामिक टेक्स है, जिसे देश पे कर रहा है। हालाँकि दुनिया के कई

इस्लामिक देशों में प्रोडक्ट बेचने के लिए हलाल सर्टिफिकेट जरूरी होता है। इसलिए जो कंपनी इन देशों में प्रोडक्ट्स भी बेचती हैं, उन्हें ऐसे देशों में बिजनेस के लिए हलाल सर्टिफिकेशन लेने की जरूरत होती है। मसलन विदेशी मुसलमान तब ही सामान खरीदता है जब उसे पक्का हो जाता है कि यह उपरोक्त कम्पनी भारत में इस्लामिक फीस दे रही है या नहीं !

यानि जब खेती के उपयोग में आने वाली भूमि, गेहूँ उगाने वाला किसान, गेहूँ की कटाई करने वाले मजदूर से लेकर मण्डियों तक पहुँचाना, फिर उसकी पैकिंग, बाद में उसे पीस कर आटे में परिवर्तित करना, वापस पैक कर के बाजार में ग्राहकों तक पहुँचाने का हर काम जब एक समुदाय विशेष के लोग ही करें, तब वह हलाल है, अगर ऐसा ना हो तो फिर यह फीस चुकाकर भी आप उसे हलाल कह सकते हैं। हो सकता है कि कुछ लोगों को पढ़ने में बहुत ही हास्यास्पद लग रहा होगा। सोच रहे होंगे कि यह भारत में संभव नहीं है। लेकिन यह संभव है और भारत में मौजूद हलाल सर्टिफिकेशन समितियाँ भी हैं। ये समितियाँ ही प्रमाण पत्र जारी करती हैं।

हलाल सर्टिफिकेशन समितियाँ भारत में मौजूद सभी छोटी-बड़ी कंपनियों के उत्पादों को हलाल सर्टिफिकेशन दे रही हैं। इसका गणित बड़ा सीधा है। जैसे उदाहरण के रूप में कॉरनिटोज कंपनी ही ले लीजिए। कॉरनिटोज के भारत में कुल ५९ उत्पाद हैं, जो आप उनकी वेबसाइट पर देख सकते हैं। यह सभी उत्पाद जमीअत उलमा-इ-हिन्द हलाल ट्रस्ट द्वारा सर्टिफाइड हैं और प्रमाण स्वरुप आपको जमीअत उलमा-इ-हिन्द हलाल ट्रस्ट का लोगो सारे उत्पादों के पैकेट्स पर दिख जाएगा। अब कॉरनिटोज कंपनी को प्राप्त हुए इस सर्टिफिकेशन के पीछे छुपे गणित पर एक नजर डालते हैं।

दरअसल जमीअत उलमा-इ-हिन्द हलाल ट्रस्ट की वेबसाइट पर उपलब्ध फीस चार्ट के मुताबिक कॉरनिटोज को रजिस्ट्रेशन के लिए बीस हजार रुपए का भुगतान करना पड़ता है। उसके पश्चात प्रत्येक उत्पाद को सर्टिफाई करने के लिए पांच सौ रुपए अलग से देने होते हैं। यानि कुल ५९ उत्पादों के पैकेट पर हलाल लोगो छापने के लिए बीस हजार रुपए, कन्साइनमेंट सर्टिफिकेशन के लिए २९ हजार ५०० रुपए, ऑडिट करने वालों के लिए पांच रुपए और इस सब के ऊपर अठारह फीसदी (जी॰ एस॰ टी॰) यानी अठारह हजार ५२० रुपए और जोड़ दें। कुल मिलकर हो गए एक लाख २२ हजार ७२० रुपए। इसके बाद वार्षिक रिन्यूअल के समय बावन हजार पांच सौ दस रुपए।

अब दिखने में यह राशि कुछ ज्यादा बड़ी नहीं लगती, बड़ी लगे भी तो क्या, इस राशि का भुगतान तो कॉरनिटोज कर रही है, तो इसमें लोग सोचते है हमें क्या फर्क पड़ता है? यहाँ ये ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है कि ऐसे सभी शुल्कों को एम आर पी में जोड़ कर हमसे से ही वसूला जाता है। यह बात सिर्फ कॉरनिटोज तक ही सीमित रहती तो शायद किसी को फर्क नहीं पड़ता, परन्तु ऐसा नहीं है। भारत में मौजूद हर दूसरी छोटी-बड़ी कंपनी हलाल सर्टिफाइड हो चुकी है और बाकी भी होने के कगार पर हैं।

इसका अर्थ ये हुआ कि ऐसी हर एक कंपनी प्रत्येक वर्ष इन हलाल बोड्र्स को एक बड़ी राशि का भुगतान कर रही है। पतंजली, आई टी सी, हल्दीराम, भीकाराम चान्दमल, से लेकर इनके अलावा भी और बहुत सारी कंपनियाँ हैं। उदाहरण के लिए– ब्रिटानिया, पार्ले, हमदर्द, हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड, टाटा केमिकल्स लिमिटेड इंडिया, जिलेटिन एंड केमिकल्स लिमिटेड, ग्लैक्सो स्मिथ क्लाइन कंज्यूमर हेल्थकेयर, आई॰

बी० ए०, बंजारा, इमामी, केविन-करे, मोर्गन ग्रुप, तेजस नेचुरोपैथी, माजा हेल्थकेयर, वीकेयर फार्कोस आदि।

ये सभी कंपनियाँ हलाल सर्टिफाइड तो हैं परन्तु अपने उत्पादों पर अभी तक हलाल का लोगो नहीं छाप रहीं। यहाँ आप अंदाजा लगा सकते हैं कि एक आम व्यक्ति के रोजमर्रा के जीवन में प्रयोग में आने वाली हर एक वस्तु हलाल सर्टिफाइड है। इस प्रकार भारत में मौजूद ये चुनिन्दा हलाल सर्टिफिकेशन समितियाँ प्रत्येक वर्ष बड़ी ही आसानी से करोड़ों या शायद अरबों रुपए की आय का लाभ उठा रही हैं।

एक सवाल ये भी उठता है कि आखिर इन सारी कंपनियों को जरूरत क्या थी हलाल सर्टिफिकेशन लेने की? दरअसल ज़्यादातर भारतीय कंपनियाँ अपने उत्पादों को विदेशों में निर्यात करती हैं। जब इन कंपनियों को किसी इस्लामिक देश में निर्यात करना होता है तब हलाल सर्टिफिकेशन लेना अनिवार्य है। यानि मुस्लिम देश सिर्फ और सिर्फ हलाल माल ही खरीदते हैं। अब सवाल ये उठता है कि ये हलाल का पैसा जाता कहाँ है?

आरोप है कि इसका एक हिस्सा ज़िहाद में जाता है। यहाँ आपको जिहाद की बहुत सारी परिभाषाएँ मिल जाएँगी और ज्यादातर अच्छी ही मिलेंगी, तो जरा एक नजर उस पर भी डाल लेते हैं। जिन कंपनियों के मैन्युफैक्चरिंग प्लांट्स इस्लामिक कन्ट्रीज में मौजूद हैं, उन्हें हलाल सर्टिफिकेशन लेने के लिए एक निश्चित राशि दान करनी पड़ती है किसी "चैरिटेबल संगठन" को लेकिन अपनी पसंद की नहीं। यहाँ भी हलाल समितियों द्वारा दी गई चैरिटेबल संगठनों की सूची को ही इस्तेमाल में लाया जाता है। मजे की बात ये है कि संयुक्त राष्ट्र ने इनमें से कुछ चैरिटेबल संगठनों को आतंकवादी समूह घोषित किया हुआ है।

भारत में हलाल सर्टिफिकेशन के नाम पर ली गई राशि को जमीअत उलेमा-इ-हिन्द कहाँ खर्च करती है, इसके बारे में स्वराज्य के वरिष्ठ संपादक अरिहंत पवरिया जी १९ दिसम्बर २०१९ को प्रकाशित हुए अपने लेख में बताते हैं कि किस प्रकार जमीअत उलेमा-ए-हिन्द आतंकवाद के मामलों में आरोपी एक समुदाय विशेष के लोगों को लगातार कानूनी समर्थन प्रदान करता है। ये तो हुई एक हलाल समिति की बात, लेकिन भारत में मौजूद बाकी सारी हलाल समितियाँ अपनी आय का क्या करती हैं, क्या उसके बारे में किसी को कुछ पता है?

लेकिन यह सब धांधली भारत में चल रही है और विडम्बना देखिये कि एक तरफ मदरसे के नाम पर हर साल करोड़ों रूपये लिए जा रहे हैं तो दूसरी तरफ ये मजहबी फीस भी लोग चुका रहे हैं। इस कारण अब योगी सरकार द्वारा हलाल प्रमाणित उत्पादों के उत्पादन, बिक्री और भंडारण को रोका जाएगा। अगर कोई दुकानदार बिक्री करते या कोई कारोबारी उत्पादन करते मिला तो उस पर कार्रवाई होगी। हलाल प्रमाणित उत्पादों को जब्त करने का अभियान चलाया जाएगा और हलाल प्रमाणित उत्पादों की बिक्री पर रोक के आदेश का अनुपालन कराया जाएगा। ❑❑

इन्द्रियों की अपेक्षा मन श्रेष्ठ है, मन की अपेक्षा बुद्धि अधिक श्रेष्ठ है, बुद्धि की अपेक्षा आत्मा और अधिक श्रेष्ठ है।

—गीता

॥ ओ३म् ॥

आर्यो ! जरा सोचिये

–राजेशार्य आट्टा पानीपत-१३२१२२, (मो०: ०९९९१२९१३१८)

प्रिय पाठकवृन्द ! हम अपने महापुरुषों के नाम के साथ कोई न कोई आदर सूचक शब्द लगा देते हैं। जैसे–श्रीराम, महात्मा बुद्ध, आचार्य चाणक्य, महात्मा गाँधी, पं० जवाहरलाल नेहरू डॉ० अम्बेडकर, ऋषि दयानन्द आदि। पर कोई यह न सोचे कि यह शब्द लगाने से उस व्यक्ति का मान-सम्मान बढ़ गया है। यह तो सामाजिक औपचारिकता मात्र है। इस औपचारिकता के कारण ही तो लोगों ने अपने धर्मग्रन्थों के साथ भी ऐसे ही शब्द लगाने शुरू कर दिये–श्रीमद्भगवद्गीता, श्री गुरुग्रन्थ साहिब, पवित्र बाइबिल, पाक कुरान आदि ।

जबकि ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् और उसके ज्ञान वेद (ऋग्वेद आदि) के साथ कोई औपचारिक शब्द नहीं जुड़ता। फिर भी उनकी महत्ता कम नहीं हुई। ऋषियों के ग्रन्थों (ईश, केन, कठ आदि उपनिषद व योग, न्याय, सांख्य आदि शास्त्रों) के विषय में भी यही सत्य है। सत्यार्थ प्रकाश भी इसी पंक्ति में है। सम्भवत: इसी बात को ध्यान में रखते हुए ही योगी अरविन्द ने स्वामी दयानन्द की महानता को दर्शाने के लिए जो लेख लिखा था, उसका शीर्षक उन्होंने 'दयानन्द' लिखा था। तब आर्यसमाज के किसी विद्वान् ने उनसे पूछ लिया था कि इतने बड़े विद्वान के नाम के आगे आपने कोई भी सम्मान सूचक शब्द नहीं लगाया, इसका क्या कारण है? यह सुनकर योगी अरविन्द ने कहा था–उन शब्दों को लगाने से दयानन्द की महत्ता बढ़ नहीं जाएगी, अपितु दयानन्द के साथ वे शब्द जुड़कर महत्ता को प्राप्त हो जाएंगे, वे सार्थक हो जाएंगे। दयानन्द तो बिना औपचारिकता के ही महान है। उसकी महानता को दर्शाने के लिए ये सब शब्द छोटे हैं। दयानन्द इनसे कहीं ऊपर है।

मोहनदास कर्मचन्द गाँधी को किसी ने एक बार 'महात्मा' कहा, तो वह शब्द उनके साथ चिपक गया 'महात्मा गाँधी' किसी ने एक बार राष्ट्रपिता कहा, तो वह शब्द भी उनके सम्मान को बढाने वाला माना जाता है–राष्ट्रपिता महात्मा गांधी। जब व्यक्ति में दम नहीं होगा, तो इन्हीं जैसी उपाधियों से वजन बढ़ाया जाता है–श्रीश्री १००८ आदि।

आज की पढ़ी-लिखी पीढ़ी ने राष्ट्रपिता शब्द को अनुचित ठहरा दिया है। उसका कहना है कि क्या गाँधी जी से पूर्व राष्ट्र नहीं था, फिर वे राष्ट्र के पिता कैसे हो सकते हैं? उन्हें भारत माता का महान सपूत तो कहा जा सकता है, राष्ट्रपिता नहीं !

इधर कुछ समय से आर्यसमाज के कुछ भावुक लोगों ने महर्षि दयानन्द को 'राष्ट्रपितामह' कहना व लिखना शुरू कर दिया। मुझे समझ नहीं आता कि महर्षि शब्द में वजन ज्यादा है या 'राष्ट्रपितामह' में! जब हम 'राष्ट्रपिता' का विरोध करते हैं, तो क्या 'राष्ट्रपितामह' का विरोध नहीं होगा?

डॉ० अम्बेडकर दलितोद्धारक थे और संविधान निर्माता भी थे। यदि उनके नाम के साथ ये शब्द लगाए जाते हैं तो कोई आपत्ति नहीं है। पर सोचिये, क्या 'भारत रत्न' लिखे बिना, उनकी महानता कम हो जाएगी? क्या १९९० ई० से पूर्व वे महान नहीं थे ? जबकि श्री जवाहरलाल नेहरू तो १९५५ ई० में ही भारत रत्न का सम्मान ले गये

थे और आज भी उनके नाम के साथ यह शब्द प्रायः नहीं लगाया जाता, तो क्या इससे उनकी महानता कम हो गई?

सोचिये, वेदों के प्रकाण्ड पण्डित, अखण्ड ब्रह्मचारी, महान योगी, सच्चे देशभक्त, गो-प्रेमी, महान ईश्वर भक्त, समाज सुधारक, प्राणी मात्र के हितैषी दयानन्द के लिए ऋषि महर्षि जैसे महान अलंकार के सामने 'राष्ट्रपितामह' शब्द की क्या गरिमा है!

एक और निवेदन

महर्षि दयानन्द के समय महिलाओं की स्थिति निश्चित रूप से दयनीय व चिन्तनीय थी और महर्षि दयानन्द ने उनकी स्थिति सुधारने का प्रयास किया। पर आर्य समाज के कुछ भावुक व्यक्ति नारी-दुर्दशा के लिए शंकराचार्य (आदिगुरु) को दोष देते हैं कि उन्होंने नारी को नरक का द्वार कहा है। यदि उन्होंने वास्तव में ऐसा कहा है, तो निश्चित रूप से वे निन्दा के पात्र हैं, पर महर्षि दयानन्द ने अप्रतिम प्रतिभा के धनी, बाल ब्रह्मचारी व संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान संन्यासी आदि गुरु शंकराचार्य की प्रशंसा करते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है–

बाईस सौ वर्ष हुए कि एक शंकराचार्य द्रविड़ देशोत्पन्न ब्राह्मण ब्रह्मचर्य से व्याकरणादि सब शास्त्रों को पढ़कर सोचने लगे कि–

अहह ! सत्य आस्तिक वेदमत का छूटना और जैन नास्तिक मत का चलना बड़ी हानि की बात हुई है। इनको किसी प्रकार हटाना चाहिये। शंकराचार्य शास्त्र तो पढे ही थे, परन्तु जैन मत के भी पुस्तक पढ़े थे, और उनकी युक्ति भी बहुत प्रबल थी। (उन्होंने उज्जैन के जैन राजा सुधन्वा से कहकर जैन पण्डितों से शास्त्रार्थ किये व उन्हें हराया) दश वर्ष के भीतर सर्वत्र आर्यावर्त देश में घूमकर जैनियों का खण्डन और वेदों का मण्डन किया। ....शंकराचार्य के पूर्व शैव मत भी थोड़ा सा प्रचारित था, उसका भी खण्डन किया। वाममार्ग का खण्डन किया। ....(कट्टर जैनों द्वारा विष दिये जाने से उनकी मृत्यु हो गई) तब सब निरुत्साही हो गये, और जो विद्या का प्रचार होने वाला था, वह भी न होने पाया। ...(सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास)

उपदेश मञ्जरी में लिखा है-"पंचशिख और शंकराचार्य इनका इतिहास देखना चाहिए कि उन्होंने सदा सत्य और सदुपदेश ही किये, उसी प्रकार संन्यासी मात्र को सदुपदेश करना चाहिए।" (तीसरा प्रवचन)

इनके पश्चात् श्रीयुत गौडपादाचार्य के प्रसिद्ध शिष्य स्वामी शंकराचार्य जी प्रादुर्भूत हुए। शंकर स्वामी वेद-मार्ग और वर्णाश्रम धर्म के मानने वाले थे। उनकी योग्यता कैसी उच्च कक्षा की थी, यह उनके बनाये शारीरक भाष्य से विदित होता है। शंकर स्वामी के समय में जो अनेक पाखण्ड मत चले थे, और जिनका कि उन्होंने खण्डन किया है, वह शंकर दिग्विजय के निम्नलिखित श्लोक से प्रकट होते हैं–

शाक्तैः पाशुपतैरपि क्षपणकैः कापालिकै वैष्णवैः
अन्यैरप्यखिलैः खलुखलैर्दुवादिभिर्वैदिकम्॥

इससे अनुमान किया जा सकता है कि श्रीमान् स्वामी शंकराचार्य ने वेद विरुद्ध मतों के खण्डन में कितना उद्योग किया है।'

(बारहवाँ प्रवचन)

"सुधन्वा राजा शास्त्रार्थ में हार गया और उसने वेद-मत को स्वीकार कर लिया। इसके पश्चात् शंकराचार्य बुद्ध गया में गए, वहाँ का राजा कट्टर बौद्ध था, वर्णाश्रम व्यवस्था को यह राजा नहीं मानता था। इस राजा को भी जीतकर शंकराचार्य ने वैदिक धर्म का अनुयायी बनाया।" (तेरहवां प्रवचन)

प्रबुद्ध पाठक ! देखिये, इन पंक्तियों में महर्षि

दयानन्द ने स्वामी शंकराचार्य की प्रशंसा ही की है, निन्दा कहीं नहीं की। जहाँ उनके अद्वैतवाद की बात है, उसका खुलकर खण्डन किया है, पर पहले लिखा है–"अब इसमें विचारना चाहिये कि जो जीव ब्रह्म की एकता, जगत् मिथ्या शंकराचार्य का निज मत था, तो वह अच्छा मत नहीं। जो जैनियों के खण्डन के लिये उस मत का स्वीकार किया हो तो कुछ अच्छा है।" (स० प्र० एकादश स०)

इन पंक्तियों को पढ़कर मुझे लगता है कि सम्भवत: नारी-निन्दा वाली पंक्तियाँ स्वामी शंकराचार्य द्वारा लिखित न होकर किसी अन्य विद्वान द्वारा प्रक्षिप्त की गई हों, अन्यथा महर्षि दयानन्द उनकी भी समीक्षा कर देते। यद्यपि शंकराचार्य के चेले (अद्वैतवादी लोग) तो उनके ग्रन्थों में लिखे अक्षर-अक्षर को प्रामाणिक मानते हैं, पर आर्यसमाज की विचारधारा तो यही मानती है कि मनुस्मृति, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में सब कुछ महर्षि मनु, महर्षि वाल्मीकि या महर्षि वेद व्यास का नहीं है। अत: उनमें लिखी किसी बुराई के लिए उनकी निन्दा नहीं करनी चाहिए, तो फिर यह भी माना जा सकता है कि स्वामी शंकराचार्य के नाम से प्रचलित ग्रन्थों में सब कुछ उनका नहीं है। फिर किसी बुराई का दोष उन्हें क्यों दिया जाए ?

आठ वर्ष की अवस्था में संन्यास लेकर शास्त्र पढने और १६ वर्ष की अवस्था से बौद्ध जैनियों को शास्त्रार्थ में पराजित करने तथा पैदल सारे देश का भ्रमण कर चारों दिशाओं में मठ स्थापित करने वाला और मात्र ३२ वर्ष की अवस्था में देह त्याग करने वाला संन्यासी कोई साधारण तो नहीं रहा होगा, जिसकी छोटी सी बात को लेकर निन्दा करने लग जाएं ! सोचिये, क्या हम महर्षि से बड़े हो गये ! ❑❑

वेदोपदेश (पृष्ठ २ का शेष)

सोम से बढ़ता है। सोम का अर्थ सोमलता ही नहीं है। सोम ब्रह्मानन्द-रस को भी कहते हैं, जैसाकि वेद में कहा है–

सोमकं मन्यते पपिवान्यत्संपिंषन्त्योषधिम् ।
सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन । –ऋ० १०।८५।३

जब ओषधि (सोमलता) को पीसते हैं, तब सोमपान किया जाना समझा जाता है, किन्तु जिस सोम को ब्रह्मवेत्ता लोग जानते और प्राप्त करते हैं, उसको कोई नहीं खाता-पीता। सचमुच ब्राह्मणों के सोम का अब्राह्मण उपभोग कर ही नहीं सकते। ब्रह्मवेत्ता का सोम ब्रह्मानन्द ही है। इसका पान करना ही इसकी रक्षा करना है, क्योंकि यह पान करने से, दान करने से बढ़ता है, घटता नहीं, जैसा कि ऋग्वेद १०।८५।५ ने स्वयं कहा है–

यत्त्वा देव प्रपिबन्ति तत आ प्यायसे पुन: । –ऋ० १०।८५।५

हे दिव्य गुणयुक्त ! जब तेरा पान किया जाता है, तब तू फिर बढ़ जाता है। ब्रह्मानन्द-रसपान से ज्ञान-प्रकाश बढ़ता है–

सना ज्योति: सना स्वर्विश्वा च सोम सौभगा। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥
–ऋ० ९।४।२

हे सोम ! हम तुझसे सदा ज्योति:, सदा आनन्द और समस्त सौभाग्य माँगते हैं। इन्हें देकर तू हमें पूजनीय–प्रशंसनीय कर दे। ❑❑

कौन कहता है, कि हम हो गए आजाद...?

रचियता–ओमदीप आर्य पुत्र स्व० श्री सुभाषचंद जी आर्य, (राजस्थान)
मोबा०–९६१०३०२७०१, ७७९२०१८६००

स्वरचित कविता

कौन कहता है,कि हम हो गए आजाद...?
कौन कहता है,कि हम हो गए आजाद...?
कभी सोचा है गंभीरता से...!
क्या तोड़ डाली है बेड़ियाँ हमने,
झूठ के उसूलों की...!
सच...!
सच तो कड़वा होता है,
तभी तो चुभता है जनाब.....!
कौन कहता है कि हम हो गए आजाद...?

: १ :

'क्या हम मुक्त हो गए हैं, नशे,धूम्रपान से....?'
कुछ ही दिनों पहले,
अखबार में छपा था...,
एक माँ लाचार हो गई है,
खोकर अपने चार बेटे जवान से...!
क्योंकि नशे के आदी थे वे,
और बर्बादी का कारण बन गए हैं...!
अपनी बूढ़ी माँ,और दृष्टिहीन बहन के...!
कुछ सपने, माँ और बेटी ने भी,
संजोए तो होंगे...!
सब के सब बदरंग हो गए,
नशे के गमगीन रंगों में...!
अब माँ को बेटों की,
और बहन को भाइयों की,
आ रही है याद...!
कौन कहता है कि,हम हो गए आजाद...?

: २ :

एक और बात,मैं तुम्हें बता दूं...!
क्या हम मुक्त हो गए,भ्रष्टाचार से...?
या फिर हम नजर आते हैं, लाचार से...?
जरा फरमाओ इस बात पर गौर...!
हर दिन लपेटे में आ रहे हैं,रिश्वतखोर...!
कुछ अफसर,कुछ नेता तक,
बन बैठे हैं चोर...!
चारों तरफ से,ऐसे ही माहौल का,
मच रहा है शोर....!
अगर नहीं लगी रोक,
तो इनकी,बढ़ती रहेगी तादाद...!
कौन कहता है कि,हम हो गए आजाद...?

: ३ :

अगर नहीं करोगे,
इन गलत कामों पर चोट..!
और नशे और भ्रष्टाचार को,
करोगे मौन सपोट....!
तो सुन लो मेरे यह बोल...!
जो आपकी आँखों को देंगे खोल...!
अगर चुभ जाए मेरी बात,
तो दिल पर मत लेना...!
कह रहा है "ओमदीप",
क्या गलत है मेरा कहना...?
अगर सहते रहे ये गुलामियाँ,
तो हो जाएंगे बर्बाद...!
कौन कहता है कि,हम हो गए आजाद...?
कौन कहता है कि हम हो गए आजाद...?

कहिए,अपने दिल पर रखकर हाथ...!
क्या सच में, हम हो गए आजाद...?
क्या सच में, हम हो गए आजाद...

❑❑

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशेष–

पिता जी की शिक्षाप्रद मृत्यु

–महात्मा मुंशीराम

पिता जी दिनों-दिन निर्बल होते जाते थे। डॉक्टरों के इलाज से भी जब कुछ लाभ न हुा तो एक बड़े प्रसिद्ध यूनानी हकीम को लाया गया। उसने मेरे पास १५० रु० की लागत का नुस्खा भेजा, जिसमें मोती आदि भी लिखे थे। नुस्खा बँधवाकर भेजा गया। हकीम जी के इलाज से एक-दो दिन कुछ चमत्कार-सा दिखाई दिया, पर पीछे उनकी दशा शोचनीय हो गयी। मैं तलवन पहुँचा और जाते ही लेटे हुए पिता जी को प्रणाम किया। मुझे देखते ही उन्होंने हाथ बढ़ाकर आशीर्वाद दिया। मैंने देखा कि मेरे सब से बड़े भाई गिलास में कुछ पीने की वस्तु लिये खड़े हैं। पिता जी ने कहा—"यदि मुंशीराम कह दे कि इसमें मांस नहीं है तो मैं पी लूँगा, वह मेरे भले के लिए भी झूठ नहीं बोलेगा।" मैं आश्चर्यित हुआ और अलग ले-जाकर भाई साहब से असल बात पूछी। उन्होंने बतलाया कि हकीम जी ने चूज़े (मुर्गी के बच्चे) का शोरबा अपनी दवाई का अनुपान बतलाया है। भाई साहब ने वही बनवाया और पिता जी को बिना बतलाये, चने का पानी कहकर पीने को दिया। उन्होंने एक घूँट लेते ही फेंक दिया और उसके पश्चात् चने का रस आदि ले-जाने पर भी घण्टों तक कुछ भोज्य-पदार्थ ग्रहण नहीं किया। मैंने उसी समय परीक्षा करके निश्चय किया कि वास्तव में उसमें मांस का कुछ भी अंश नहीं है और गिलास पिता जी के सामने पेश किया। उन्होंने केवल दो शब्द कहे—"पी लूँ?" मैंने उत्तर दिया—"पी लीजिए।" इस पर उन्होंने उसे पी लिया। मैंने देख लिया कि पिता जी का अन्तिम समय ही है। हकीम जी की भी बुद्धि काम नहीं करती थी। फिल्लौर का डॉक्टर बड़ा योग्य सुना गया था। उसे भी बुलाया। रात किसी प्रकार से काटी। प्रातः नये डॉक्टर ने भी कुछ यत्न आरम्भ किया। हिचकी बड़ी जोर की थी, उसे बन्द करना कठिन हो गया। दोपहर के बाद उन्होंने मुझे पास बिठाकर उपनिषदों का पाठ करने के लिए कहा। मैंने ईशोपनिषद् को समाप्त करके 'कठ' का पाठ आरम्भ किया। पिता जी ने इशारे से कान अपने मुँह के पास ले जाने को कहा। हिचकी बोलने नहीं देती थी। शब्द कठिनाई से निकले किन्तु थे स्पष्ट—"वैदिक हवन कराओ!" मेरा मुंशी साथ आया था। तेज घोड़ी पर उसे भेजा कि जालन्धर से सामग्री लेकर दूसरे दिन तक पहुँचा जाए।

मध्याह्नोत्तर कुछ शान्ति रही, फिर चित्त अधिक बिगड़ने लगा। कुछ काल के पश्चात् थोड़ा सँभले। सारे परिवार को इकट्ठा करके आशीर्वाद दिया। मेरे कुछ भाई सांसारिक बातें करने लगे; सबको हटवा दिया और फिर आँखें बन्द कर लीं। रात को खाना-पीना त्याग दिया। पण्डित काशीराम आकर बैठे, कहा—भजन बोलो। वह कृष्णभक्ति के कुछ पद बोलने लगे। कहा—"जो आप न छूटा वह दूसरों को कैसे छुड़ाएगा? मुंशी जी! कोई निर्गुण-पद बोलो।" मुंशी जी ने एक भजन कहा, उसे सुनकर वह बहुत ही सन्तुष्ट हुए। फिर कहा—"मैं तो अब अच्छा हूँ, तुम सो जाओ।" मैं बैठा रहा। तब मुझे निश्चय दिलाने के लिए आँखें बन्द कर लीं। मैं

कुछ काल के पश्चात् लेट गया किन्तु नींद न आई। फिर पिता जी का श्वास शीघ्रगामी हुआ। उठकर मैं पैर दाबने लगा। फिर मैंने उनका सिर मला। उन्हें नींद आ गई। दो घण्टे तक मैं हल्के हाथों सिर दाबता रहा और वह बराबर सोते रहे। दूसरे दिन अच्छे दिखाई दिये। मुंशी सामग्री लेकर न आया और पिता जी ने तीन बार पूछा—"वैदिक हवन कब होगा? शीघ्र होना चाहिए।" शाम से फिर अवस्था बिगड़ने लगी। आठ बजे मेरे हाथ में नाड़ी थी और वेदमन्त्रों का मैं पाठ कर रहा था। मेरे बड़े चचा ने गीता का पाठ आरम्भ किया। ९ बजे पिता जी ने प्राण त्याग दिये और नाड़ी बंद हो गई।

उसी समय स्त्रियों का रोना-पीटना आरम्भ हो गया। कुछ काल तो मैं चुप रहा किन्तु फिर इस शोर को हटाकर सारा परिवार कोई तीन सौ नगर-निवासियों सहित मृतक शरीर के पास रतजगा करता रहा। मेरी विचित्र दशा थी, पिता जी के देहान्त से मानो माता-पिता दोनों से वियोग हो गया। न रोना आता था और न आस-पासवालों की बातें समझ में आती थीं। प्रातः फिर भाइयों और बिरादरी में कानाफूसी शुरू हुई। मुझे खयाल हुआ कि शायद मुझे पौराणिक अन्त्येष्टि संस्कार के लिए तंग करें, किन्तु जब आपस की बड़ी हलचल देखकर भी मैं न हिला तो किसी का हौसला मुझे कुछ भी कहने का न पड़ा। बड़े भाई ने पौराणिक रीति से अर्थी के साथ-साथ कार्यवाही शुरू की और घृत-चन्दनादि के लिए आज्ञा दी। पिता जी के नौकर ने बहुत्र-सा केशर निकालकर दिया। अब बिना बोले निर्विकल्प समझौता हो गया कि श्मशान भूमि में पहुँचते ही मृतक शरीर के साथ किसी का वास्ता न रहेगा। श्मशान में पहुँचने पर मेरी आज्ञानुसार वेदी बनी और चन्दन की लकड़ी लगायी गयी। मन्त्रपाठ करनेवाले मैं और मुंशी काशीराम तथा आहुति डालनेवाले केवल कुछ मेरे विचार के लोग ही नहीं प्रत्युत मेरे ज्येष्ठ भ्रातादि भी थे। उसी समय सामग्री लेकर मेरा आर्यसमाजी मुंशी पहुँचा। कुछ सामग्री वहाँ डाली गयी और शेष से उस स्थान पर, जहाँ पिता जी का देहान्त हुआ था, सायंकाल को हवन हुआ।

उस समय की और दो घटनाएँ वर्णन करने योग्य हैं। जब मृतक शरीर को जलाने की तैयारी हुई तब अर्थी के ऊपर के कारचोबी के दुशाले पर महाब्राह्मणों में झगड़ा हो गया। एक कहता था कि केवल मेरा ही अधिकार है किन्तु दो और उससे भाग माँगते थे। जबकि हमारा सारा परिवार शोक-सागर में डूबा हुआ था उस समय इन देवताओं का बाजारियों की तरह श्मशान में झगड़ना मुझे बहुत अनुचित प्रतीत हुआ और मैंने मृतक शरीर को कारचोबी के दुशालेसहित चिता में रखकर भस्म करा दिया। दूसरी घटना बड़ी ही हृदय-वेधक थी। पिता जी के देहान्त के समय मेरी एक ही सन्तान अर्थात् मेरी बड़ी पुत्री वेदकुमारी थी। वह उस समय ५ वर्ष की होगी। पिता जी को उसके साथ बड़ा ही प्रेम था। भोजन के समय उन्हीं के साथ वह खाती थी। जब प्रातः अर्थी को ले चले तो उसने पूछा—"लाला जी कहाँ हैं?" उस समय माता ने बिलखकर कहा—"लाला जी तो मर गये!" बेचारी कन्या ने न किसी को मरते देखा था, न उसको ऐसी घटना का ज्ञान था। सबको शान्ति से कहती फिरी—"लाला जी मर गये।" पिता जी को सब 'लाला जी' कहकर पुकारते थे, इसलिये पुत्री कुमारी भी ऐसा ही कहती थी। श्मशान से जब लौटकर आये तो पिता जी की बैठक को अन्दर से बन्द करके मैं सोने की चेष्टा करने लगा। उस समय वेदकुमारी नित्य आकर पिता जी से फल आदि मिठाई खाने को लिया करती थी और वह उसकी बालक्रीडा को देखकर प्रसन्न होते और उसे प्यार किया करते

थे। नियमानुसार बालिका आ खड़ी हुई। किवाड़ बन्द देखकर धक्का दिया। फिर पुकारा—'लाला जी, खोलो!' जब किसी ने न सुना तो किवाड़ को पकड़कर चीखने लगी—'लाला जी! कुण्डा खोलो!..... हाय खोलते नहीं।' रोने का शब्द सुनकर मैं उठ खड़ा हुआ। किवाड़ खोला तो बालिका अन्दर को गिर पड़ी। उठकर पलंग से लिपट गयी। तब उसको पता लगा कि मरना किसे कहते हैं, और वह आप-से-आप समझ गयी कि लाला जी के शरीर को जला आये हैं। बालिका पलंग के पावे के साथ लिपटी हुई विलाप करने लगी और मैंने भी आठ-आठ आँसू रोना शुरू किया। स्त्री-पुरुषों का एक समूह एकत्र हो गया और धाड़ें मार-मारकर सब रोने लगे। यदि उस समय पुत्री न रुला देती तो शायद मैं पत्थर-सा बना रहता और शायद किसी बड़े रोग से ग्रस्त भी हो जाता।

ज्येष्ठ भ्राता जी ने गरुड़पुराण की कथा रखायी। मैंने उसी समय जुदा उपनिषदों का स्वाध्याय आरम्भ कर दिया। सब सम्बन्धी वगैरह आये थे और रात को इकट्ठे डेढ़-सौ पुरुष भूमि पर शय्या करके सोते थे। इस अवसर पर कइयों ने दस दिनों के अन्दर मेरा विरोध करने का प्रयत्न किया, परन्तु आगे बढ़ने का हौसला किसी का न हुआ।

पिता जी के देहान्त पर मेरी एक प्रकार से कायापलट हो गई। अन्त समय में उन्होंने मेरी सच्चाई पर जो विश्वास प्रकट किया, उसने मुझे सत्य-पालन की ओर सर्वथा झुका दिया। मैंने दृढ़ संकल्प किया कि पिता जी की मंगल इच्छा के अनुकूल ही आचरण करना चाहिए। यह इसी का परिणाम था कि जब सारे भाई इस सन्देह में थे कि जो तालियाँ पिता जी के देहान्त से बाहरवें दिन भीमा ने, उनकी अन्तिम आज्ञानुसार, मेरे सामने रख दी थीं, उनसे ताले खुलने पर उन लोगों को भी कुछ लाभ पहुँचेगा वा नहीं। तब मैंने स्वयं उन्हें जमा करके उनकी इच्छानुसार सबको सन्तुष्ट करने के पश्चात् जो बच रहा वही लिया।

पिता जी का देहान्त १२ आषाढ़ (२६ जून) को हुआ था। एक महीना मैंने खुर्जा, बरेली और बनारस की कोठियों से पिता जी का जमा किया हुआ रुपया वसूल करने में बिताया। बरेली और बनारस में पुराने मित्र भी मिले, परन्तु मेरा उनके रहन-सहन से बहुत भेद हो चुका था। फिर भी सबने मेरे साथ पुराने ही प्रेम का व्यवहार किया। भाद्रपद (अगस्त) मास में नगद रुपया भी बाँट दिया। मेरे तीनों भाइयों ने अधिक नगदी ली और मुझे पूरा दाम लगाकर बग्घियाँ और घोड़े दिये गये जिनके कारण मेरा मासिक व्यय पहले से बहुत बढ़ गया। सारी सामग्री को तलवन में छोड़कर मैं जालन्धर पहुँच गया।

जालन्धर में मैंने सूदों की चौकवाली बैठक छोड़ दी थी। मेरा परिवार अपने पितृगृह में निवास करता था, मैं भी वहीं जाकर टिका, क्योंकि वकालत की परीक्षा के लिए फिर लाहौर जाना था और मुखतारी का काम पिता जी के देहान्त पर जालन्धर से अनिश्चित-अनुपस्थिति के कारण बन्द हो चुका था। मैं शायद उसी समय लाहौर चला जाता किन्तु दशहरे के मेले की मण्डी पर तीन में से दो जानवर 'एक घोड़ा और एक घोड़ी' बेच देने का विचार था। इसलिए भी दशहरे के मेले तक ठहरना पड़ा। घोड़े का बाँकपन और शान देखकर म्यूनिसिपैलिटी की ओर से इनाम तो मिल गया, किन्तु सौदा एक जानवर का भी न हुआ, इसलिए सब जानवरों के पालन का बोझ सिर पर रख मैं लाहौर को चल दिया। ❑❑

(पुस्तक 'कल्याण मार्ग का पथिक' से साभार)

जो धर्म को जानने की इच्छा करें, उनके लिये वेद ही परम प्रमाण है।

वर्तमान समाज में युवाओं की भूमिका

लेखक–ओमदीप आर्य (राजस्थान), मोबा०–९६१०३०२७०१, ७७९२०१८६००

चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तो श्रेष्ठ समाज का निर्माण उसका दायित्व ही नहीं बल्कि अधिकार भी है और श्रेष्ठ समाज अपना भविष्य युवाओं में महसूस करता है लेकिन समस्या यह है कि युवा अपनी भूमिका में समाज का सहयोग महसूस ही नहीं कर रहा है इसके पीछे बहुत से कारण हैं!

१. समय का अभाव :–ना तो समाज के बुजुर्ग लोगों के पास समय है और ना ही समाज के युवाओं के पास, जिससे ना तो एक दूसरे के विचारों का आदान-प्रदान हो रहा है ना ही उनके विचारों को जानने का अवसर मिल रहा है।

२. पैसे की चकाचौंध :–पैसे की चकाचौंध में आज का युवा अपने समाज को भूलकर स्वयं में ही सिमटता जा रहा है। उसे सिर्फ पैसे से ही मतलब है,समाज से नहीं।

३. सामाजिक संस्कारों का अभाव :–जब वर्तमान युवा को सामाजिक संस्कार विरासत में नहीं मिलेंगे तो वह समाज में अपनी भूमिका नहीं निभा सकता। उदाहरण के तौर पर आज के अधिकांश युवाओं को अपने धर्मग्रन्थों के बारे में नहीं पता, यह सामाजिक संस्कारों के अभाव को ही दर्शाता है।

४. माहौल का सामाजिक से आर्थिक हो जाना :–वर्तमान में जो माहौल समाज में दिखाई देता है,इसमें सामाजिकता से ज्यादा आर्थिकता को महत्व दिया जा रहा है, जिससे युवा समाज से स्वयं को उपेक्षित महसूस करते हुए दूर होता जा रहा है।

५. आपसी तालमेल की कमी :–समाज में आज जो बुजुर्ग दिखाई देते हैं वे अपने युवाओं से ना तो अपेक्षा रखते हैं और ना ही यह महसूस करते हैं कि यह हमारा भविष्य हो सकते हैं क्योंकि दोनों के विचारों में दिन रात का अंतर है और हो भी क्यों ना क्योंकि दोनों की उम्र में करीब २५ से ३५ वर्ष का अंतर है स्पष्ट करता है कि दोनों का तालमेल सहज ही नहीं बैठ सकता लेकिन इसके समाधान भी हैं!

१. युवा बुजुर्गों को,और बुजुर्ग युवाओं को दे मान सम्मान :–आज के युवा और बुजुर्ग, पैसे से ज्यादा मान सम्मान के भूखे हैं इसलिए युवाओं को समाज के वरिष्ठ लोगों के लिए एवं वरिष्ठ लोगों को समाज के युवाओं के लिए मर्यादित मान सम्मान देना ही होगा।

२. आपस में विचारों का आदान प्रदान हो :–समाज के बुजुर्ग लोगों को युवाओं के विचारों को समझना होगा और युवा भी बुजुर्गों के विचारों को समझें और उन्हें महसूस करें।

३. भागती दौड़ती जिंदगी में से समाज के लिए समय निकालें युवा :–इस भागती दौड़ती जिंदगी में से युवाओं को कुछ समय समाज के लिए भी निकालना चाहिए जिससे समाज को समझा जा सके।

(शेष पृष्ठ २७ पर)

आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

—डॉ० विवेक आर्य (मो०-८०७६९८५५१७)

• आर्य समाज ये नहीं मानता कि श्रीकृष्ण जी माखनचोर थे, गौएँ चुराते थे, गोपियों संग रास रचाते थे, राधा संग प्रेम प्रसंग में लिप्त थे, कुब्जा दासी से समागम किए थे, ईश्वर का अवतार थे।

बल्कि ये मानता है कि वे जन्म से लेकर ४८ वर्ष तक ब्रह्मचारी थे, केवल एक रुक्मणी से विवाह करके भी उसके साथ विष्णु पर्वत पर उपमन्यु ऋषि के आश्रम में १२ वर्ष ब्रह्मचर्य तप करके अपने समान तेजस्वी पुत्र प्रद्युम्न को पैदा किया, योगेश्वर होने से वे नित्य ईश्वरोपासना, प्राणायाम, संध्या, अग्निहोत्र आदि करते थे, अनेकों प्रकार की युद्ध कलाओं में दक्ष थे, उनका प्रिय शस्त्र सुदर्शन चक्र था, महान विचारक थे, अद्वितीय योद्धा थे, भारतवर्ष के समस्त गणराज्यों को यादवों के संघर्ष तले एक करने वाले महान राजनीतिज्ञ थे ।

..... तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

• आर्य समाज रामचरितमानस के आधार पर ये नहीं मानता कि हनुमान जी बंदरमुखी थे, न ये मानता है कि उन्होंने पूँछ से लंका दहन किया।

बल्कि वाल्मिकी रामायण के आधार पर ये मानता है कि कि हनुमान जी दक्षिण भारत की क्षत्रिय शाखा जो वन में बसती है उसमें से अखंड ब्रह्मचारी, महाबली, व्याकरण के धुरंधार विद्वान, वेदों के ज्ञाता थे ।

..... तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

• आर्य समाज गरुड़, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, भागवत आदि १८ नवीन पुराणों को नहीं मानता क्योंकि इनमें परस्पर विरोधाभास, देवी देवताओं के बारे में अभद्र अश्लील कथाएँ वर्णित हैं, अपने अपने देवों की स्तुति और अन्यों की निंदा है, जिन्हें व्यासकृत माना जाता है जबकि वे पक्षपातियों के द्वारा समय समय पर रचे हुए कपोल कल्पित ग्रंथ हैं ।

बल्कि ये मानता है कि चारों वेदों के चार ब्राह्मण ग्रंथ (ऐतरेय, तैत्तरीय, शतपथ, गोपथ) को ही पुराण कहते हैं । जिनमें आश्वलायन, याज्ञवल्क्य, जैमीनि आदि ऋषियों-ऋषिकाओं का प्रमाणिक इतिहास है ।

..... तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

• आर्य समाज ये नहीं मानता कि हिंदुओं के सारे संस्कृत शास्त्र प्रमाणिक हैं ।

बल्कि ये मानता है कि केवल वेद और वेद के सिद्धांतों के अनुकूल चलने वाले ग्रंथ (दर्शन, उपनिषद्, अरण्यक, वेदांग, रामायण, मनुस्मृति, महाभारत, कौटिल्य अर्थशास्त्र) आदि ही प्रमाणिक हैं ।

..... तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

• आर्य समाज ये नहीं मानता कि पत्थर के लिंग पर दूध चढ़ाने से, मूर्ति के आगे माथा टेकने से, हाथ जोड़ने से, धूप अगरबत्ती करने से, मूर्ति को भोग लगाने से, कपड़े पहनाने से, ढोल बाजे बजाने से, और नाचने आदि अँधविश्वास से ईश्वर की भक्ति होती है ।

बल्कि ये मानता है कि पतंजलि ऋषि के योगशास्त्र की उपासना विधि (यम नियम पालन,

प्राणायाम, प्रणवजप, ध्यान आदि) से ही निराकार सर्वव्यापक परमेश्वर की उपासना होती है । इसी विधि से हमारे पूर्वज ऋषि मुनि दुर्गा, राम, कृष्ण, सीता, सावित्री, शिव, हनुमान आदि उपासना किया करते थे । सो हमें भी ऐसे ही करनी चाहिए ।

..... तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

• आर्य समाज ये नहीं मानता कि तीर्थयात्राएँ करने से, गंगा स्नान से, पंडे पुजारियों को दान देने से, व्यर्थ के पाखंड करके धन, समय, ऊर्जा, आदि व्यर्थ करने से मनोकामना पूरी होती है ।

बल्कि ये मानता है कि ऋषि परम्परा के अनुसार घर में हवन (अग्निहोत्र) करने से ३३ कोटि (३३ प्रकार के) देव, [११ रुद्र, ८ वसु, १२ आदित्य मास, इन्द्र (विद्युत)] की पुष्टि होती है जिससे कि वृष्टि आदि समय पर होकर औषधियों का पोषण होता है, फल फूल शाक सब्जी अन्न आदि की वृद्धि और शुद्धता होती है, ऐसा एक यज्ञ करने से हजारों मनुष्यों का उपकार होता है जैसा कि गीता में भी कहा है । एक यज्ञ में ही भरपूर पुण्य मिलता है ।

..... तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

• आर्य समाज ये नहीं मानता कि मृतक का श्राद्ध करने से, पंडों का पेट भरने से, अस्थियाँ गंगा में बहाने आदि से मृत की आत्मा को शांति मिलती है ।

बल्कि ये मानता है कि व्यक्ति अपने किये कर्मों का स्वयं उत्तरदायी है, शव का दाह संस्कार (नरमेध यज्ञ) करने के बाद घर में वायु शुद्धि हेतु हवन करवाना चाहिये, उसके बाद मृतक की अस्थियों को जल में डालने के बजाए किसी खेत में खाद के रूप में प्रयोग करना चाहिये,,इसके बाद मृतक के लिये शेष कुछ भी न करना चाहिए।

..... तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

• आर्य समाज ये नहीं चाहता कि करोड़ों, अरबों, खरबों का धन मंदिरों में दान देकर उसे व्यर्थ किया जाये , जिससे कि पंडे पुजारी अपनी तोंद भरने में, अपने बंगले बनाने में, अपने गले में मोटे मोटे सोने की चैन डालकर उस धन पर हराम की कमाई फ्री में खाएँ । और न ही ये चाहता है कि उस धन का ७०% भाग मस्जिदों और चर्चों पर खर्च हो ।

बल्कि ये चाहता है कि इसी अपार धन से हम वैदिक गुरुकुल, संस्कृत पाठशालाएँ, वैदिक विज्ञान पर शोध हेतु प्रयोगशालाएँ खोलें । जिससे कि हमारा देश शीघ्रता से संस्कृत राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर हो और वही प्रचीन आर्यवर्त देश बने, अनाथाश्रम आदि खोले जायें जिससे कि हिंदू बच्चे मदरसों और कानवेंट आदि में न जाकर मुसलमान ईसाई होने से बचें ।

..... तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

• आर्य समाज ये नहीं चाहता कि खोखले लोकतंत्र के आधार पर राजनैतिक पार्टियाँ हिंदुओं को जाति में तोड़कर वोट लेती रहें और एक समुदाय विशेष का पोषण करती रहे और बेचारा हिंदू केवल झंडा उठाकर हिंदू राष्ट्र का स्वप्न मात्र ही देखता रहे और ये हरामी नेता हिंदुओं को बरगलाकर वोट लेते रहें और शोषण करते रहें ।

बल्कि ये चाहता है कि लोकतंत्र जैसे भ्रष्टतंत्र को उखाड़कर मनुस्मृति के आधार पर राजतंत्र स्थापित किया जए और वैदिक शासन की नींव रख (सच्चा हिंदुत्व) स्थापित किया जा सके ताकि हमारा राजा पूरी पृथिवी को एकछत्र वैदिक गणराज्य में लाकर युधिष्ठिर, विक्रमादित्य की भांति खंडित मानवीय शासन के स्थान पर अखंडित वैदिक चक्रवर्ती राज्य स्थापित करे और

राजसूय यज्ञ करे ।

..... तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

आर्यसमाज विवेकानंद और उसके रामकृष्ण मठ की सकुलर विचारधारा को नहीं मानता । आर्य समाज नहीं मानता कि माँस खाने वाला और दूसरों को माँस खाने का सुझाव देने वाला विवेकानंद कोई संन्यासी था, नहीं मानता कि उसने अमरीका में भाषण देने के सिवाय कभी गौरक्षा पर बात की हो, कभी धर्म परिवर्तन रोकने का प्रयास किया हो, कभी स्वतंत्रता के लिये कुछ किया हो, कभी स्त्री शिक्षा के लिये कुछ किया हो, कभी कानवेंट स्कूल के स्थान पर गुरुकुलीय शिक्षा की बात की हो, कभी किसी मौलवी या पादरी से शास्त्रार्थ करके अपने वैदिक धर्म को श्रेष्ठ सिद्ध किया हो ।

बल्कि ये मानता है कि वेद के आधार पर ब्रह्मचर्य, शाकाहार आदि का पालन और प्रचार करने वाले महर्षि दयानंद ने ही हिंदू समाज का उद्धार किया । गौरक्षा हेतु आंदोलन किया, स्त्री शिक्षा आरंभ करवाई, धर्म परिवर्तन को रोक उलटा शुद्धि चक्र चलाया, स्वतंत्रता हेतु युवा तैयार किए, कानवेंट शिक्षा समाप्त कर वैदिक गुरूकुल खोलने का प्रयास किया, मौलवियों पादरियों से शास्त्रार्थ करके उनको धूल चटाई और हिंदुओं के मुर्दा शरीरों में गर्म रक्त का संचार किया ।

..... तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ? ❑❑

हमारा अभिवादन नमस्ते ही है

नमस्ते का अर्थ–नमः+ते=नमस्ते, अर्थात् तेरे या आपके लिए आदर सत्कार नमः का अर्थ है सत्कार, श्रद्धा तथा झुकना। ते का अर्थ तुम्हें या आपके लिए। संस्कृत भाषा में छोटे बड़े दोनों के लिए एक वचन का ही प्रयोग होता है। अतः 'ते' ही छोटे बड़े सबके लिए आता है ।

प्रश्न–बड़े छोटों को नमस्ते कहें क्या यह असंगत तथा अनुचित नहीं ?

उत्तर–नहीं । बड़ों का छोटों के प्रति आशीर्वाद ही उनकी पूजा अथवा सत्कार है ।

नमस्कार=नमः+कारः, यानि सत्कार किया। परन्तु इसमें यह नहीं आया कि किसका सत्कार किया। इसलिए नमस्कार शब्द अधूरा है नमस्ते ही ठीक है। परस्पर मिलने पर अभिवादन के तौर पर और कोई भी शब्द संगत (उचित) नहीं है ।

शास्त्रों में नमस्ते का शब्द हजारों स्थानों पर मिलता है–

नमस्ते रुद्र मन्यवे । (यजुर्वेद)

अर्थ–दुष्टों को रुलाने वाले परमात्मा को नमस्कार हो।

सा होवाच–नमस्ते याज्ञवल्क्याय । (शतपथ ब्राह्मण)

गार्गी ने अपने पति याज्ञवल्क्य को नमस्ते कहा।

ज्येष्ठोराजन् वरिष्ठोऽसि नमस्ते भरतर्षभ। (महाभारत)

शकुनि ने युधिष्ठिर को नमस्कार किया ।

हराए नमस्ते हरए नमह । (गुरुग्रन्थ साहब)

हरि (परमेश्वर) को नमस्कार है, नमस्कार है । ❑❑

स्वर्ग, नरक–स्वर्ग या नरक नाम के कोई विशेष स्थान नहीं हैं, अपितु सुख विशेष का नाम स्वर्ग और दुःख विशेष का नाम नरक है।

चन्द्रयान सफलता

आनन्द प्रकाश आर्य, पानीपत मो०:-(९२१५७००७१०)

जुलाई शुक्रवार था, मेरे भारत का ऊँचा भाल हुआ,
'उन क्षणों में अति उत्साहित, हर वनिता वृद्ध व बाल हुआ ।
धन्य वैज्ञानिक भारत के, जो ये चालीस दिन का सफर हुआ,
अन्तिम लक्ष्य निश्चित जिसका, प्यारे चन्दा मामा का घर हुआ ।
लोहा मान रही सारी दुनिया, भारतवर्ष की बुद्धिमानी का,
क्योंकि हमने ही पता लगाया, चन्दा के ऊपर पानी का ।
जिस जगह को कोई देख सका ना, अब उस पर हमें उतरना है,
दक्षिण ध्रुव पर चन्द्र के जा, हमको ही पग धरना है ।
प्यार भरी जो राखी भेजी, धरती ने अपने भाई को,
सजा लिया है चन्दा मामा ने, उससे अपनी कलाई को ।
आज २३ अगस्त को वहाँ पर, जैसे ही सूरज उग आया था,
चन्द्रयान ने उसी समय नीचे को, अपना कदम बढाया था ।
कई चक्कर लगाये धरती के, फिर चन्दा के गिर्द घूम लिया,
६ बजकर ०४ मिनट पर हमने, प्यारे चन्दा को चूम लिया ।
हो गया अन्तरिक्ष दिवस, २३ अगस्त का यह दिन पावन,
उमंग भरा था यह मस्त महीना, जिसको कहते हैं सावन ।
रूस का लूना २५ तो, अपने अभियान में उथल पुथल हुआ,
जहाँ छुआ चाँद को विक्रम ने, वो बिन्दू शिवशक्ति स्थल हुआ ।
सारी दुनिया को पता है, चाँद से रिश्ता हमारा गहरा है,
'तिरंगा' 'प्वाइंट' दिया नाम उसे, जहाँ चन्द्रयान-२ ठहरा है ।
सबने भेजी बधाई पर कुछ, सकुचाए यह सत्य पीने में,
ईर्ष्या से जलन हो गई, उनके दर्द हो गया सीने में ।
पर जब जब उसने की शरारत, हमने उसके पर कुतरे हैं,
जो हिस्सा चाँद का तेरे झण्डे पर, उस पर ही हम उतरे हैं ।
हमारे द्वारा ही चन्दा के, दक्षिण में जाने का आगाज हुआ,
ऋषि दयानन्द का भारत, यहाँ भी दुनिया का सरताज हुआ ॥ ❑❑

वैदिक राजधर्म

–प्रस्तुति : दिनेश कु० शास्त्री (मो०–९६५०५२२७७८)

'राजधर्म' का अर्थ है राजा अर्थात् शासक का कर्त्तव्य यानि राजवर्ग को देश का संचालन कैसे करना है, इस विद्या का नाम ही 'राजधर्म' है। राजधर्म की शिक्षा के मूल वेद हैं। मनुस्मृति, शुक्रनीति, महाभारत के विदुर प्रजागर तथा शान्तिपर्व आदि में भी राजधर्म की बहुत सी व्याख्या है। महर्षि दयानन्द ने भी 'सत्यार्थ प्रकाश' में एक पूरा समुल्लास राजधर्म पर लिखा है। इस लेख में इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर राजधर्म का वर्णन किया जाएगा। वह सब वेद अनुकूल होने से इस विषय का नाम 'वैदिक राजधर्म' रखा गया है।

१. लूटने वाला हमारा शासक न हो–

ओ३म् रक्षा माकिर्नो अधशंस ईशत मा नो दुशंस ईशात ।
मा नो अद्य गवां स्तेनो मावीनां वृक ईशत॥

(अथर्ववेद)

अर्थ–हे ईश्वर ! आप हमारी रक्षा करें। कोई भी दुष्ट दुराचारी अन्यायकारी हम पर शासन न करे। हमारी वाणी पर पाबन्दी लगाने वाला, हम किसानों से हमारी भूमि छीनने वाला तथा हम पशु पालकों से हमारे गौ आदि पशु छीनने वाला व्यक्ति हमारा शासक न बने। भेड़िया बकरियों का राज न हो।

२. तानाशाह प्रजा का नाशक होता है–

राष्ट्रमेव विश्या हन्ति तस्माद्राष्ट्री विशं घातुकः।
विशमेव राष्ट्रायाद्यां करोति तस्माद्राष्ट्री विशमत्ति न पुष्टं पशुं मन्यत इति ॥

(शतपथ ब्राह्मण)

अर्थ–यदि राजवर्ग पर प्रजा का नियन्त्रण न रहे तो राजवर्ग प्रजा का ऐसे नाश कर देता है जैसे जंगल में शेर सभी हृष्ट-पुष्ट पशुओं को मारकर खा जाता है। इसलिए किसी एक को स्वतन्त्र शासन का अधिकार नहीं दिया जाना चाहिए।

राजा कौन? वैदिक ग्रन्थों में सभापति को ही राजा (राष्ट्रपति) कहा गया है। यह राजा या सभापति कोई खानदानी नहीं होता अपितु प्रजा द्वारा चुना हुआ ही होता है। शास्त्रों में ऐसा बताया गया है कि राजा के ऊपर सभा का नियंत्रण, सभा के ऊपर राजा का, प्रजा के ऊपर सभा का तथा राजा और सभा दोनों के ऊपर प्रजा का नियन्त्रण रहना चाहिए।

३. सचिव कैसे और कितने हों–

मौलान् शास्त्रविदः शूरान् लब्धलक्ष्यान् कुलोद्गतान् ।
सचिवान् सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान्॥

(मनुस्मृति)

अर्थ–अपने देश में उत्पन्न हुए, वेदादि शास्त्रों के विद्वान्, जिनमें अपने लक्ष्य तक पहुँचने की योग्यता हो और जा सदाचारी परिवार से सम्बन्ध रखते हों, अच्छी प्रकार परीक्षा करके ऐसे सात या आठ सचिव रखे जाएँ।

४. शासक प्रजा की रक्षा कैसे करें–

यथोद्धरति निर्दाता कक्षं धान्यं च रक्षति।
तथा रक्षेन्नृपो राष्ट्रं हन्याच्च परिपन्थिनः॥

(मनुस्मृति)

अर्थ–जैसे धान से चावल निकालने वाला छिलके को अलग कर चावलों की रक्षा करता

है, चावलों को टूटने नहीं देता। वैसे ही राजा रिश्वतखोरों, अन्यायकारियों, चोर बाजारी करने वालों, डाकुओं, चोरों और बलात्कारियों को मारे और बाकी प्रजा की रक्षा करे।

यथा हि गर्भिणी हित्वा स्वं प्रियं मनसोऽनुगम्।
गर्भस्य हितमाधत्ते तथा राजाप्यसंशयम्॥

(महाभारत-शान्तिपर्व)

अर्थ–राजा को गर्भिणी के समान वर्तना चाहिए। जिस प्रकार गर्भिणी अपना हित त्याग गर्भ की रक्षा करती है उसी प्रकार राजा को अपना हित त्याग सदा प्रजा के हित का ही ध्यान रखना चाहिए।

५. वैदिक दण्ड व्यवस्था–

कार्षापणं भवेद्दण्ड्यो यत्रान्यः प्राकृतो जनः।
तत्र राजा भवेद्दण्ड्यः सहस्रमिति धारणा ॥

(मनुस्मृति)

अर्थ–जिस अपराध में साधारण मनुष्य पर एक रुपया दण्ड हो उसी अपराध में राजा पर हजार रुपया दण्ड होना चाहिए।

६. रिश्वत लेने वालों को दण्ड–

ये कार्यिकेभ्योऽर्थमेव गृह्णीयुः पापचेतसः।
तेषां सर्वस्वमादाय राजा कुर्यात्प्रवासनम्॥

(मनुस्मृति)

अर्थ–जो न्यायधीश वादी या प्रतिवादी से रिश्वत लेकर के पक्षपात से अन्यायकरे उसकी सारी सम्पत्ति जब्त करके उसे कहीं दूर भेज दिया जाए।

७. कर लेने का ढंग–

यथाऽल्पाऽल्पमदन्त्याद्यं वार्योकोवत्स-षट्पदाः।
तथाऽल्पाऽल्पो ग्रहीतव्यो राष्ट्राद्राज्ञाब्दिकः करः ॥

(मनुस्मृति)

अर्थ–जैसे जोंक, बछड़ा और भौंरा थोड़े-थोड़े भोज्य पदार्थ को ग्रहण करते हैं। वैसे राजा प्रजा से थोड़ा-थोड़ा वार्षिक कर लेवे।

८. सभा में सभासदों का कर्तव्य–

सभा वा न प्रवेष्टव्या वक्तव्यं वा समञ्जसम्।
अब्रुवन्विब्रुवन्वापि नरो भवति किल्विषी ॥

(मनुस्मृति)

अर्थ–मनुष्य को चाहिए कि वह सभा में जाकर सत्य ही बोले। जो कोई सभा में अन्याय होते को देखकर चुप रहे या सत्य और न्याय के विरुद्ध न बोले वह महापापी होता है।

यत्र धर्मो हि अधर्मेण सत्यं यत्र अनृतेन च।
हन्यते प्रेक्षमाणानां हतास्तत्र सभासदः ॥

(मनुस्मृति)

अर्थ–जिस सभा में अधर्म से धर्म यानि अन्याय से न्याय और असत्य से सत्य सब सभासदों के देखते हुए मारा जाता है, उस सभा में सब मुर्दे के समान हैं।

९. यथा राजा तथा प्रजा–

राज्ञि धर्मिणी धर्मिष्ठाः पापे पापाः समे समाः।
राजानमनुवर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजाः॥

(चाणक्यनीति)

अर्थ–यदि राजा यानि शासकवर्ग सदाचारी और न्यायकारी होंगे तो प्रजा भी सदाचारी और न्यायकारी बन जाती है। यदि शासकवर्ग दुराचारी हो तो प्रजा भी दुराचारी बन जाती है। प्रजा तो अपने शासकों के पीछे ही चलती है।

आम लोग राजा के कृपापात्र बनने की इच्छा से वैसा ही आचरण करते हैं जैसा राजा करता है। इसलिए शासक वर्ग के लिए आवश्यक है कि वे दुराचार कभी न करें। सदा सत्य और न्याय पर चलते हुए प्रजा के आगे उत्तम दृष्टान्त बनें।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेव इतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥
(गीता)

अर्थ–समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति जैसा व्यवहार करते हैं दूसरे लोग भी वैसा ही करते हैं। वे लोगों के सामने जैसा उदाहरण रखते हैं लोग उसका अनुसरण करते हैं।

१०. राष्ट्रीय प्रार्थना–

ओं आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्
आ राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी
महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः
सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः
सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो
नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः
कल्पताम् ॥ *(यजुः० २२।२२)*

भाषानुवाद–

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म-तेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल-विनाशकारी।।
होवें दुधारु गौएँ, पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही ।।
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान-पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें ।।
फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी।।

अर्थ–हे सबसे महान् प्रभु ! आपसे प्रार्थना है कि हमारे देश में सब सत्य विद्याओं के ज्ञाता विद्वान् हों जिनके पुरुषार्थ से अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि होती रहे। राष्ट्र के शत्रुओं को मारने में समर्थ शूरवीर क्षत्रिय उत्पन्न हों। दूध, घी, अन्न, सब्जियों और फलों की देश में भरमार हो। बैल, घोड़ा, गाड़ी आदि की सुविधाएँ सदा बनी रहें। राष्ट्र की महिलाएँ सन्तान के धारण तथा पालन-पोषण में समर्थ रहें। जब-जब आवश्यकता हो वर्षा हुआ करे। अतिवृष्टि (वर्षा का बहुत अधिक हो जाना) और अनावृष्टि (वर्षा बिल्कुल न होना) कभी न हो। देशवासियों का सदा कल्याण हो। सभी आनन्द से रहें। कोई भूखा, प्यासा, नंगा और दरिद्र न रहे। देश से अज्ञान, अन्याय और अभाव का नाश हो। ❑❑

वर्तमान समाज में युवाओं की भूमिका (पृष्ठ २० का शेष)

४. बुजुर्ग दें सामाजिक संस्कार :–समाज के युवाओं को क्षीण हो रहे सामाजिक संस्कार देने का कार्य अनुभवी बुजुर्गों को करना ही होगा।

५. पैसे की जगह अनुभव और कार्यशैली को प्रधानता देनी होगी :–हम सिर्फ पैसे तक ही सीमित होते जा रहे हैं, जबकि हमें इसकी जगह अनुभव और कार्यशैली को प्रमुखता देनी होगी। नवक्रांति को स्वीकार करना होगा।

अतः संक्षेप में कहें तो समाज में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए समाज के वरिष्ठ एवं बुजुर्ग लोगों को समझदारी दिखाते हुए नव विचारों को समझना होगा और उन्हें महत्व देना होगा जबकि युवाओं को भी अपनी भूमिका समझते हुए समाज के वरिष्ठ लोगों के अनुभव को महत्व देना होगा और आपस में सामंजस्य बना कर समाज में अपनी भूमिका स्थापित करनी ही होगी ताकि समाज को श्रेष्ठतम और सर्वोत्तम बनाया जा सके। ❑❑

- **वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।** –महर्षि दयानन्द

आर. एन. आई. नं० १६३३०/६७
Post in Delhi R.M.S
०५-११/१२/२०२३
भार ४० ग्राम

दिसम्बर २०२३

रजिस्टर्ड नं० DL (DG -11)/8029/2021-23
लाईसेन्स नं० यू (डी०एन०) १४४/२०२१-२३
Licenced to post without prepayment
Licence No. U (DN) 144/2021-23

पाठकों से निवेदन

१. अपने पत्रों मे अपनी ग्राहक संख्या अवश्य ही लिखा करें, अन्यथा कार्यवाही सम्भव नहीं होगी।
२. १५ तारीख तक प्रतीक्षा करके ही दुबारा अंक मँगाएँ, यदि अंक न पहुँचा हो।
३. यदि आप अपना पता बदलवायें तो यह ध्यान रखें कि बदले हुए पते पर अंक-प्रेषण एक माह बाद आरम्भ होगा।
४. अंक के रेपर पर अपना पता चैक कर लिया करें। यदि कोई त्रुटि हो, तो सूचना दे दिया करें।
५. जिन ग्राहकों का शुल्क समाप्त है, अविलम्ब भेजने की कृपा करें।

-दिनेश कुमार शास्त्री
कार्यालय व्यवस्थापक
मो०-९६५०५२२७७८

आरत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

	मुद्रित मूल्य	प्रचारार्थ
प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	₹60	₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100
स्थूलाक्षर (अजिल्द) 20x30%8	₹200	₹120
उपहार संस्करण	₹1100	₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	रु. २५०/-	रु. १६०/-
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	रु. ३००/-	रु. २००/-

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

छपी पुस्तक/पत्रिका

श्री सेवा में.....
ग्राम.....
डा०.....
जिला.....

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक धर्मपाल आर्य, स्वामित्व आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, ४२७, गली मन्दिर वाली, नया बांस, खारी बावली, दिल्ली-११०००६ से प्रकाशित एवं तिलक प्रिंटिंग प्रेस, २०४६, बाजार सीता राम, दिल्ली-११०००६ से मुद्रित।